Daksh®

25 सितम्बर 2025 को जारी विज्ञप्ति,
परिवर्तित एवं नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

RPSC अजमेर द्वारा आयोजित

A Complete Guide for

सामान्य शिक्षा, संस्कृत शिक्षा, विशेष शिक्षा भर्ती परीक्षा
हेतु समान रूप से उपयोगी

ग्रेड-2nd शिक्षक भर्ती

हिन्दी

द्वितीय प्रश्न पत्र

- खंड-प्रथम : माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर की व्याकरण
- खंड-द्वितीय : स्नातक स्तर के हिन्दी साहित्य के इतिहास की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रचनाएँ एवं रचनाकार
- खंड-तृतीय : हिन्दी शिक्षण एवं शिक्षण विधियाँ

- 08 सितम्बर 2025 का प्रश्नपत्र सम्पूर्ण हल एवं व्याख्या सहित
- विगत 10 वर्षों के प्रश्नपत्रों में पूछे गये प्रश्नों का अध्यायवार समावेश
- पाठ्यक्रम में शामिल प्रत्येक बिन्दु पर आधारित प्रश्नों का महत्त्व के अनुसार समावेश

आचार्य संदीप मालाकार

Buy Online at :
WWW.DAKSHBOOKS.COM

दक्ष®

Daksh®

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा आयोजित

A Complete Guide for

सामान्य शिक्षा, संस्कृत शिक्षा एवं विशेष शिक्षा भर्ती परीक्षा हेतु समान रूप से उपयोगी

ग्रेड-2nd शिक्षक भर्ती

हिन्दी

द्वितीय प्रश्न पत्र

पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार एकमात्र पुस्तक

- यह पुस्तक **RPSC** द्वारा जारी **25 सितम्बर 2025** को जारी विज्ञप्ति के परिवर्तित व नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार तैयार की गई है।
- इस पुस्तक में गत वर्षों के **II** ग्रेड परीक्षा में आए हुए **10** वर्षों के पेपर्स **(2025, 2024, 2023, 2022, 2019, 2018, 2017, 2014, 2011)** के **1500** प्रश्नों का संकलन किया गया है।
- इसमें संधि, समास, संज्ञा, सर्वनाम, उपसर्ग, काव्यगुण, काव्य दोष, छंद, अलंकार एवं रस की महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी **Tables** व प्रश्न दिए गए हैं।
- सम्पूर्ण पुस्तक में लगभग **3000** प्रश्नों का संकलन है।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास (आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, कहानी उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि) की महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तालिकाएँ व प्रश्नों का समावेश।
- इसमें शिक्षण विधियों, सहायक सामग्री, भाषायी कौशल व मूल्यांकन के महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नों का समावेश है।
- स्नातक स्तर के कवियों सूरदास, तुलसी, मीरां, बिहारी, दिनकर, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द, कबीर आदि की रचनाओं की सप्रसंग व्याख्या व कहानियों के पात्रों का चरित्र चित्रण एवं सारांश दिया गया है।

लेखक

आचार्य संदीप मालाकार

NET, साहित्याचार्य, शिक्षा शास्त्री

DAKSH PUBLICATIONS

(A Unit of College Book Centre)

WWW.DAKSHBOOKS.COM

प्रकाशक :
परितोष वर्धन जैन
कॉलेज बुक सेन्टर
A-19, सेठी कॉलोनी,
जयपुर-302 004

सादर समर्पण

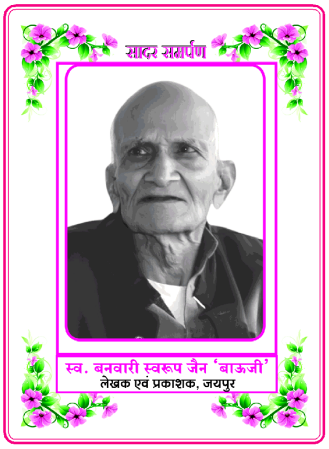

स्व. बनवारी स्वरूप जैन 'बाऊजी'
लेखक एवं प्रकाशक, जयपुर

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

–:: लेखक परिचय ::–

आचार्य संदीप मालाकार

आचार्य संदीप मालाकार की स्नातकोत्तर शिक्षा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान त्रिवेणी नगर जयपुर से हुई। इन्होंने शास्त्री (2001), आचार्य (2004), शिक्षा शास्त्री (2003), में करने के बाद NET (73) कोड से (2007) में उत्तीर्ण की। इनकी हिन्दी व संस्कृत व्याकरण व साहित्य पर विशेषज्ञता है। इनका विभिन्न B.Ed. महाविद्यालयों व कोचिंग संस्थानों का अध्यापन अनुभव 19 वर्षों का है। इसके अतिरिक्त ये विगत 15 वर्षों से संस्कृत व हिन्दी विषय से सम्बन्धित विभिन्न पुस्तकों का लेखन कार्य कर रहे हैं। इनकी पुस्तकें पढ़कर अनेक प्रतियोगी परीक्षाओं के छात्र सफल हुये हैं। यह पुस्तक भी छात्रों हेतु विशेष रूप से उपयोगी होगी तथा इसे पढ़कर छात्र अवश्य सफल होंगे।

DTP :
Pooja Enterprises
Jaipur

Printed by :
K.D. Printers
Jaipur

Code No.: D-901

- *प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी प्रणाली के सहारे पुन:उत्पत्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके (इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फॉटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, डिजिटल, वेब) के माध्यम से अथवा इस पुस्तक का नाम, टाईटल, चित्र, रेखाचित्र, नक्शे, डिजाईन, कवर डिजाईन, सैटिंग, शिक्षण-सामग्री, विषय-वस्तु, पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी भाषा में हूबहू या तोड़-मरोड़ कर या अदल-बदल कर प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है। इस पुस्तक के प्रतिलिप्याधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।*
- *पुस्तक का कम्पोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा कराया गया है। पुस्तक के लेखन व प्रकाशन कार्य में लेखक, प्रूफ रीडर, कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरतने के बावजूद भी अधूरी या पुरानी जानकारी का होना/कुछ ग़लतियों/कमियों का रह जाना मानवीय भूलवंश सम्भव है, जिसके लिए पुस्तक प्रकाशन से जुड़े मुद्रक, लेखक एवं प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे। पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।*
- *सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जयपुर (राज.) होगा।*

प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों,

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा आयोजित **वरिष्ठ अध्यापक (ग्रेड-2nd)** भर्ती परीक्षा की तैयारी कर रहे आप सभी छात्रों को सफलता हेतु शुभकामनाएँ।

हम यह समझते हैं कि प्रतियोगी परीक्षाओं के इस दौर में हिन्दी व्याकरण, साहित्य, शिक्षण विधियों के प्रश्नों का स्तर लगातार कठिन होता जा रहा है और कई बार उनके सटीक उत्तर प्रामाणिक पुस्तकों में भी सरलता से नहीं मिल पाते। इसी समस्या के समाधान और आपकी तैयारी को एक नई दिशा देने के उद्देश्य से इस पुस्तक की रचना की गई है।

इस पुस्तक को लिखते समय हमारा एकमात्र लक्ष्य यह रहा है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास, व्याकरण एवं शिक्षण विधियों में औसत या कठिनाई महसूस करने वाला कोई भी विद्यार्थी आत्मविश्वास के साथ परीक्षा दे सके। इसमें **वरिष्ठ अध्यापक (ग्रेड-2nd)** के नवीन पाठ्यक्रम में नये प्रकरण जोड़े गये हैं। जैसे-कुरुक्षेत्र, गोदान, कहानी - यही सच है, आषाढ़ का एक दिन आदि। इन सभी कहानियों का सारांश, सप्रसंग व्याख्याएँ व पात्रों का चरित्र चित्रण भी इस इस पुस्तक में दिया गया है। इसमें सभी प्रकरणों को चार्ट, चित्र व सारणियों के माध्यम से समझाया गया है।

यह पुस्तक केवल अध्ययन सामग्री का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि यह आपकी सफलता की राह में एक मार्गदर्शक है। इसमें विगत दस वर्षों **(2011** से **2025** तक) के 10 प्रश्न-पत्रों में पूछे गए **1500** प्रश्नों का समावेश किया गया है।

हमें विश्वास है कि बाजार में उपलब्ध अन्य पुस्तकों के बीच यह पुस्तक आपको नवीनतम, परीक्षा-केंद्रित और अभ्यास के लिए अतिरिक्त उदाहरण उपलब्ध कराएगी। हमारा संकल्प शिक्षा को उस अंतिम विद्यार्थी तक पहुँचाना है जो संसाधनों के अभाव में पीछे रह जाता है। यह पुस्तक उसी संकल्प को साकार करने की दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक आपकी वरिष्ठ अध्यापक बनने की यात्रा में **''मील का पत्थर''** साबित होगी और आप निश्चित सफलता प्राप्त करेंगे।

आपकी सफलता की शुभकामनाओं सहित

लेखक एवं प्रकाशक

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION, AJMER

SYLLABUS

SR.TEACHER (GRADE-II)

SECONDARY EDUCATION DEPARTMENT

हिन्दी • PAPER-II

खंड-प्रथम

माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर :-

- **वर्ण–व्यवस्था**
  - स्वर व व्यंजनों का वर्गीकरण
  - कोश–क्रम
- **शब्द–वर्गीकरण (स्रोत के आधार पर)**
  - तत्सम
  - तद्भव
  - विदेशी
- **शब्द–वर्गीकरण (व्याकरण आधारित)**
  - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया व इन सभी के भेद
  - क्रियाविशेषण व भेद
- **व्याकरणिक कोटियाँ**
  - लिंग
  - वचन
  - कारक
  - काल
- **शब्द–रचना**
  - संधि (स्वर व व्यंजन) व भेद
  - समास व भेद
  - उपसर्ग
  - प्रत्यय व भेद
- **शब्द–ज्ञान**
  - पर्यायवाची शब्द
  - विलोम शब्द
  - अनेकार्थी शब्द
  - समश्रुत भिन्नार्थक शब्द
  - वाक्यांश के लिए एक शब्द
- **वाक्य –रचना**
  - वाक्य के अंग
  - वाक्य के भेद–उपभेद
- **शब्द–शुद्धीकरण**
- **वाक्य –शुद्धीकरण**
- **मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ** – अर्थ एवं प्रयोग

खंड-द्वितीय

स्नातक स्तर :-

- **शब्द शक्तियाँ, काव्य–गुण**
  - भेद व उदाहरण
- **काव्य–दोष**
  - श्रुतिकटुत्व, ग्राम्यत्व, अप्रतीतत्व, क्लिष्टत्व, अक्रमत्व तथा दुष्क्रमत्व
- **अलंकार**
  - श्लेष, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विभावना, संदेह, भ्रांतिमान, विरोधाभास, अतिशयोक्ति, असंगति, अपह्नुति ।
- **छंद**
  - द्रुतविलम्बित, हरिगीतिका, दोहा, सोरठा, कुण्डलिया, चौपाई, छप्पय, मन्दाक्रान्ता, मनहरण कवित्त, मत्तगयन्द सवैया
- **रस**
  - रस का स्वरूप, रसावयव, रस–भेद

- **हिन्दी साहित्य का इतिहास (पूर्व आधुनिक काल)**
  - ○ नामकरण व कालविभाजन
  - ○ आदिकाल, भक्तिकाल व रीतिकाल
    - ▪ काव्य धाराएँ, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रचनाएँ व रचनाकार
- **हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)**
  - ○ **पद्य** ▪ भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, छायावादोत्तर युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रचनाएँ व रचनाकार
  - ○ **गद्य** ▪ कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रचनाएँ व रचनाकार
- **हिन्दी भाषा**
  - ○ हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास
  - ○ हिन्दी एवं उसकी बोलियाँ
  - ○ राजस्थानी की प्रमुख बोलियाँ
  - ○ देवनागरी लिपि का मानक स्वरूप

निर्धारित पाठ :-

- **कबीर ग्रन्थावली** – सं. श्यामसुन्दर दास ○ साखी – प्रारम्भिक 5 अंग ○ पद – प्रारम्भिक 10 पद
- **रामचरितमानस** – तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर ○ बालकाण्ड
- **भ्रमरगीतसार** – सूरदास – सं. रामचन्द्र शुक्ल ○ पद– प्रारम्भिक 20 पद
- **मीरां पदावली** – सं. शम्भूसिंह मनोहर ○ पद– प्रारम्भिक 20 पद
- **बिहारी रत्नाकर** – सं. जगन्नाथदास रत्नाकर ○ दोहे– प्रारम्भिक 20 दोहे
- **वीर सतसई** – सूर्यमल्ल मीसण – सं. नरोत्तमदास स्वामी, डॉ. नरेन्द्र भानावत, लक्ष्मी कमल ○ दोहे– प्रारम्भिक 20 दोहे
- **कुरुक्षेत्र** – रामधारी सिंह दिनकर ○ छठा सर्ग
- **कामायनी** – जयशंकर प्रसाद ○ श्रद्धा सर्ग
- **चिन्तामणि (भाग–1)** – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ○ उत्साह ○ श्रद्धा और भक्ति ○ लोभ और प्रीति
- **गोदान** – प्रेमचन्द
- **कहानियाँ** ○ उसने कहा था – चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ○ पूस की रात – प्रेमचन्द ○ यही सच है – मन्नू भंडारी
- **आषाढ़ का एक दिन** – मोहन राकेश

खंड-तृतीय हिन्दी शिक्षण एवं शिक्षण विधियाँ :-

(अ)

- भाषायी कौशलों के विकास हेतु निम्नांकित पक्षों के स्वरूप का शिक्षण– श्रवण, उच्चारण, वर्तनी, वाचन (सस्वर व मौन) अभिव्यक्ति (लिखित एवं मौखिक)
- हिन्दी की विभिन्न विधाओं का शिक्षण, शिक्षण विधियाँ एवं पाठ योजना निर्माण (इकाई व दैनिक)– गद्य शिक्षण, पद्य शिक्षण, व्याकरण शिक्षण, रचना शिक्षण, नाटक शिक्षण

(आ)

- भाषा शिक्षण में निदानात्मक परीक्षण व उपचारात्मक शिक्षण
- भाषा शिक्षण में सहायक सामग्री का उपयोग
- भाषा शिक्षण में मूल्यांकन– सतत एवं समग्र मूल्यांकन, पाठान्तर्गत व पाठोपरांत मूल्यांकन

For the competitive examination for the post of Senior Teacher:-

1. The question paper will carry maximum **300 marks**.
2. Duration of question paper will be **Two Hours Thirty Minutes**.
3. The question paper will carry **150 questions** of multiple choices.
4. Negative marking shall be applicable in the evaluation of answers. For every wrong answer one third of the marks prescribed for that particular question shall be deducted.
5. Paper shall include following subjects :-
   (i) Knowledge of Secondary and Senior Secondary Standard about relevant subject matter.
   (ii) Knowledge of Graduation Standard about relevant subject matter.
   (iii) Teaching Methods of relevant subject.

विषय-सूची

अध्याय संख्या | अध्याय का नाम .... पृष्ठ नम्बर

❖ ग्रेड-2nd शिक्षक भर्ती परीक्षा 8 सितम्बर, 2025 का प्रश्न-पत्र सम्पूर्ण हल एवं व्याख्या सहित P-1–P-20

खंड-प्रथम — माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर — 1-224

वर्ण-व्यवस्था

1 स्वर व व्यंजनों का वर्गीकरण 1
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 10
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 11

2 शब्दकोश-क्रम 13
- ❖ महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 16

शब्द-वर्गीकरण (स्रोत के आधार पर)

3 तत्सम, तद्भव, विदेशी शब्द 18
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 23
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 25

4 संज्ञा 26
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 33
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 33

5 सर्वनाम 35
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 40
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 40

6 विशेषण 42
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 50
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 50

7 क्रिया एवं क्रियाविशेषण के भेद 52
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 59
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 59

क्रिया विशेषण के भेद 61
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 62
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 63

व्याकरणिक कोटियाँ

8 लिंग 64
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 70
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 70

9 वचन 72
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 75
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 75

अध्याय संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
10	कारक	76
	❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	82
	❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर	82
11	काल	83
	❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	87
	❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर	87
	शब्द-रचना	
12	सन्धि (स्वर व व्यंजन) व भेद	88
	❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	103
	❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर	103
13	समास व भेद	105
	❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	116
	❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर	117
14	उपसर्ग	119
	❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	125
	❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर	125
15	प्रत्यय व उसके भेद	127
	❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	135
	❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर	136
	शब्द-ज्ञान	
16	पर्यायवाची शब्द	137
	❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	141
	❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर	142
17	विलोम शब्द	144
	❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	148
	❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर	148
18	अनेकार्थी शब्द	150
	❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	153
	❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर	153
19	समश्रुत भिन्नार्थक शब्द	155
	❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	159
	❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर	159
20	वाक्यांश के लिए एक शब्द	161
	❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	167
	❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर	167
	वाक्य-रचना	
21	वाक्य के अंग, वाक्य के भेद-उपभेद	169
	❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	178
	❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर	180
22	शब्द शुद्धिकरण	182
	❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	192
	❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर	193

अध्याय संख्या अध्याय का नाम ..... पृष्ठ संख्या

23 वाक्य शुद्धिकरण 194
❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 205
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 206

24 मुहावरे (अर्थ एवं प्रयोग) 209
❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 214
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 215

25 लोकोक्तियाँ (अर्थ एवं प्रयोग) 217
❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 223
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 224

खंड-द्वितीय स्नातक स्तर 225-502

1 शब्द शक्तियाँ, भेद व उदाहरण 225
❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 231
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 232

2 काव्य-गुण, भेद व उदाहरण 233
❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 236
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 237

3 काव्य-दोष (श्रुतिकटुत्व, ग्राम्यत्व, अप्रतीतत्व, क्लिष्टत्व, अक्रमत्व तथा दुष्क्रमत्व) 238
❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 243
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 243

4 अलंकार (श्लेष, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विभावना, संदेह, भ्रांतिमान, विरोधाभास, अतिशयोक्ति, असंगति, अपह्नुति) 244
❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 260
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 261

5 छंद (द्रुतविलम्बित, हरिगीतिका, दोहा, सोरठा, कुण्डलिया, चौपाई, छप्पय, मन्दाक्रान्ता, मनहरण कवित्त, मत्तगयन्द सवैया) 264
❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 272
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 273

6 रस (रस का स्वरूप, रसावयव, रस-भेद) 274
❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 291
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 292

7 हिन्दी साहित्य का इतिहास (पूर्व आधुनिक काल-नामकरण व कालविभाजन) 295
❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 302
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 302

हिन्दी साहित्य का इतिहास आदिकाल
(आदिकाल : काव्य धाराएँ, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रचनाएँ एवं रचनाकार) 304
❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 319
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 321

हिन्दी साहित्य का इतिहास भक्तिकाल
(भक्तिकाल : काव्य धाराएँ, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रचनाएँ एवं रचनाकार) 323
❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 359
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 360

अध्याय संख्या *अध्याय का नाम* .... *पृष्ठ संख्या*

हिन्दी साहित्य का इतिहास रीतिकाल
(रीतिकाल : काव्य धाराएँ, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रचनाएँ एवं रचनाकार) **362**
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 381
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 382

8 **हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)** **384**
(पद्य - भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, छायावादोत्तर युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रचनाएँ व रचनाकार)
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 408
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 410

(गद्य - कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रचनाएँ व रचनाकार) **413**
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 464
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 467
- ❖ हिन्दी साहित्य के इतिहास पर आधारित अन्य महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 469

9 **हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास** **473**
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 476
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 476

10 **हिन्दी भाषा एवं उसकी बोलियाँ** **478**
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 485
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 485

11 **राजस्थानी की प्रमुख बोलियाँ** **487**
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 495
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 495

12 **देवनागरी लिपि का मानक स्वरूप** **497**
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 500
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 501

खंड-द्वितीय निर्धारित पाठ 503-786

कबीर : (1398-1518 ई.)

1 **कबीर ग्रन्थावली (सं. श्यामसुन्दर दास)** **503**
(साखी - प्रारम्भिक 5 अंग, पद - प्रारम्भिक 10 पद)
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 524
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 526

तुलसीदास : (1532-1623 ई.)

2 **रामचरित मानस (बालकाण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर)** **527**
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 600
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 601

सूरदास : (1483-1563 ई.)

3 **भ्रमरगीतसार (प्रारम्भिक 20 पद- सं. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)** **603**
- ❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 615
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 616

मीराँबाई : (1503-1546 ई.)

4 **मीराँ पदावली (प्रारम्भिक 20 पद-सं. शम्भूसिंह मनोहर)** **617**

अध्याय संख्या अध्याय का नाम ..... पृष्ठ संख्या

❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 624
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 625

बिहारी : (1595-1663 ई.)

5 बिहारी रत्नाकर (प्रारम्भिक 20 दोहे-सं. जगन्नाथदास रत्नाकर) 627
❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 634
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 635

सूर्यमल्ल मीसण (मिश्रण) : (1815-1868 ई.)

6 वीर सतसई (प्रारम्भिक 20 दोहे) (सं. नरोत्तमदास स्वामी/डॉ. नरेन्द्र भानावत/लक्ष्मी कमल) 637
❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 642
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 643

रामधारी सिंह 'दिनकर': (1908-1974 ई.)

7 कुरुक्षेत्र (छठा सर्ग) 644
❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 658
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 658

जयशंकर प्रसाद : (1889-1937 ई.)

8 कामायनी (श्रद्धा सर्ग) 660
❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 670
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 671

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : (1884-1941 ई.)

9 चिन्तामणि, भाग-1 निबंध (उत्साह, श्रद्धा और भक्ति व लोभ और प्रीति) 672
❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 691
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 692

मुंशी प्रेमचन्द : (1880-1936 ई.)

10 गोदान (उपन्यास) 694
❖ महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 713

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' : (1883-1922 ई.)

11 उसने कहा था 715
❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 723
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 724

मुंशी प्रेमचन्द : (1880-1936 ई.)

12 पूस की रात 725
❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 730
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 731

मन्नू भंडारी : (1931-2021 ई.)

13 यही सच है 732
❖ महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 745

मोहन राकेश : (1925-1972 ई.)

14 आषाढ़ का एक दिन 747
❖ RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 785
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 785

अध्याय संख्या अध्याय का नाम ..... पृष्ठ संख्या

खंड-तृतीय हिन्दी शिक्षण एवं शिक्षण विधियाँ 787-928

(अ)

1 श्रवण कौशल शिक्षण 787

- श्रवण कौशल शिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 789
- श्रवण कौशल हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 790
- RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 790
- अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 790

2 उच्चारण कौशल शिक्षण 791

- उच्चारण कौशल शिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 794
- उच्चारण कौशल हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 795
- RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 795
- अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 795

3 वर्तनी कौशल शिक्षण 796

- वर्तनी कौशल शिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 800
- वर्तनी कौशल हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 800
- RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 800
- अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 800

4 वाचन कौशल शिक्षण (सस्वर वाचन एवं मौन वाचन) 801

- वाचन एवं पठन कौशल शिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 806
- वाचन एवं पठन कौशल हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 807
- RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 807

5 अभिव्यक्ति कौशल शिक्षण (मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति) 808

- अभिव्यक्ति कौशल शिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 816
- अभिव्यक्ति कौशल हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 816
- RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 817

6 सूक्ष्म शिक्षण कौशल 818

- सूक्ष्म शिक्षण कौशल हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 822
- सूक्ष्म शिक्षण कौशल हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 823
- RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 823
- अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 824

7 गद्य शिक्षण (गद्य की शिक्षण विधियाँ) 829

- गद्य शिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 833
- गद्य शिक्षण हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 833
- RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 834
- अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 835

8 पद्य शिक्षण (पद्य की शिक्षण विधियाँ) 836

- पद्य शिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 841
- पद्य शिक्षण हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 841
- RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 842
- अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 842

9 व्याकरण शिक्षण (व्याकरण की शिक्षण विधियाँ) 843

- व्याकरण शिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 849

अध्याय संख्या — अध्याय का नाम ..... पृष्ठ संख्या

- ❖ व्याकरण शिक्षण हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 849
- ❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 849

10 रचना शिक्षण (रचना की शिक्षण विधियाँ) 851

- ❖ रचना शिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 856
- ❖ रचना शिक्षण हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 856
- ❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 857

11 नाटक शिक्षण (नाटक की शिक्षण विधियाँ) 858

- ❖ नाटक शिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 861
- ❖ नाटक शिक्षण हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 861
- ❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 862
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 862

12 पाठ-योजना निर्माण (इकाई योजना एवं दैनिक पाठ योजना) 863

- ❖ इकाई योजना हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 865
- ❖ इकाई योजना हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 865
- ❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 866
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 866

12(A) दैनिक पाठ योजना निर्माण (गद्य, पद्य, व्याकरण, रचना, नाटक शिक्षण) 867

- ❖ दैनिक पाठ योजना हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 884
- ❖ दैनिक पाठ योजना हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 884
- ❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 884

12(B) भाषा शिक्षण के उपागम (अभिक्रमित अनुदेशन, समूह शिक्षण, ICT कम्प्यूटर का शिक्षा में उपयोग) .. 885

- ❖ भाषा शिक्षण के उपागम हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 891
- ❖ भाषा शिक्षण के उपागम हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 891
- ❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 892
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 892

(आ)

1 भाषा शिक्षण में निदानात्मक परीक्षण व उपचारात्मक शिक्षण 893

- ❖ भाषा शिक्षण में निदानात्मक व उपचारात्मक शिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 897
- ❖ भाषा शिक्षण में निदानात्मक व उपचारात्मक शिक्षण हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 897
- ❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 897
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 897

2 भाषा शिक्षण में सहायक सामग्री का उपयोग (दृश्य, श्रव्य एवं दृश्य-श्रव्य सामग्री) 899

- ❖ भाषा शिक्षण में सहायक सामग्री के उपयोग हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 910
- ❖ भाषा शिक्षण में सहायक सामग्री के उपयोग हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 911
- ❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 911
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर 912

3 भाषा शिक्षण में मूल्यांकन (सतत व व्यापक मूल्यांकन) पाठान्तर्गत व पाठोपरांत मूल्यांकन 913

- ❖ भाषा शिक्षण में मूल्यांकन हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster] 925
- ❖ भाषा शिक्षण में मूल्यांकन हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु 926
- ❖ RPSC ग्रेड–2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 927

विज्ञप्ति 2024

परीक्षा 08 सितम्बर, 2025 को आयोजित

[Secondary Education Department]

• समय/Time : 2.30 घण्टे/Hours • प्रश्नों की संख्या/Number of Questions : 150 प्रश्न • पूर्णांक/Maximum Marks : 300

1. किस विकल्प के सभी शब्द अशुद्ध हैं?

(A) व्यवसायिक, मार्मिक, पर्वतीय

(B) क्योकि, गृहणी, आहवान

(C) दिवाली, घोटाला, केंद्रीय

(D) अंधाधुंध, डावाँडोल, आगंतुक **[B]**

व्याख्या—इस विकल्प में दिए गए तीनों शब्द वर्तनी की दृष्टि से अशुद्ध हैं। इन शब्दों के शुद्ध रूप हैं – **'क्योंकि'**, **'गृहिणी'** और **'आह्वान'**

2. निम्नलिखित में से अशुद्ध शब्द नहीं है—

(A) पुनरपि (B) पश्चाताप

(C) अधिशाषी (D) भर्तस्ना **[A]**

व्याख्या—दिए गए विकल्पों में से **'पुनरपि'** शब्द शुद्ध है। इसका अर्थ **'फिर भी'** या **'दोबारा'** होता है। यह एक अव्यय शब्द है। अन्य विकल्पों में दिए गए शब्द अशुद्ध हैं, जिनके शुद्ध रूप क्रमशः **'पश्चात्ताप'**, **'अधिशासी'** और **'भर्त्सना'** हैं। इन शब्दों में वर्णों के क्रम और प्रकार संबंधी अशुद्धियाँ हैं।

3. निम्न में से शुद्ध शब्द है—

(A) सौंदर्यता (B) आधीन

(C) लब्धप्रतिष्ठ (D) अक्षोहिणी **[C]**

व्याख्या—**'लब्धप्रतिष्ठ'** शब्द वर्तनी की दृष्टि से पूर्णतः शुद्ध है, जिसका अर्थ होता है **'प्रतिष्ठा प्राप्त किया हुआ'**। अन्य विकल्पों में दिए गए शब्द अशुद्ध हैं। **'सौंदर्यता'** के स्थान पर शुद्ध शब्द **'सौंदर्य'** या **'सुंदरता'** होता है, **'आधीन'** के स्थान पर **'अधीन'** तथा **'अक्षोहिणी'** के स्थान पर **'अक्षौहिणी'** शुद्ध रूप है।

4. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य नहीं है—

(A) यह पद कई भावों को प्रकट करता है।

(B) अब मेरी बात मान लो।

(C) नौकर के हाथ भेज देना।

(D) आज तुम फिर इतनी देर में आये। **[A]**

व्याख्या—दिए गए विकल्पों में से वाक्य (A) व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है। इस वाक्य में **'प्रकट करना'** क्रिया का प्रयोग उचित नहीं है। व्याकरण के नियमानुसार मन के भावों, विचारों या भावनाओं को दर्शाने के लिए 'व्यक्त करना' क्रिया का प्रयोग किया जाता है।

अतः, इस वाक्य का शुद्ध रूप होगा– **'यह पद कई भावों को व्यक्त करता है।'**

5. निम्नलिखित में से किस विकल्प के सभी शब्द शुद्ध हैं?

(A) भगीरथी, द्वारका, अन्तर्द्वन्द (B) आगामी, बरात, स्वादिष्ठ

(C) वाल्मीकि, निरोग, नुपुर (D) सुई, अनुग्रहित, दृष्टा **[B]**

व्याख्या—उपरोक्त में से विकल्प (B) के सभी शब्द शुद्ध हैं – अन्य के शुद्ध रूप हैं – नीरोग, नूपुर, सूई, अनुग्रहीत, द्रष्टा, अन्तर्द्वन्द्व, द्वारिका, भागीरथी।

6. इनमें से कौन सा वाक्य शुद्ध है?

(A) ये भी वैसे ही पंडित हैं, जैसे आप।

(B) आपके सब काम हमसे अच्छे होते हैं।

(C) कोट का दाम पाजामे से अधिक होता है।

(D) वे अपने आपको समझदार और दूसरे को बेईमान समझते हैं। **[A]**

व्याख्या—विकल्प (A) व्याकरण की दृष्टि से एक शुद्ध वाक्य है। यह वाक्य संरचना और अर्थ दोनों ही दृष्टिकोण से पूर्णतः सही है।

7. अशुद्ध वाक्य नहीं है—

(A) उसने गुरु के चरणों में अपना सिर रख दिया।

(B) वह मुझ पर क्रुद्ध है।

(C) आत्मा के अन्दर बल होना चाहिए।

(D) बजट के ऊपर बहस होगी। **[B]**

व्याख्या—दिए गए विकल्पों में, वाक्य (B) वह मुझ पर क्रुद्ध है।' पूर्ण रूप से शुद्ध है। इस वाक्य में कारक का सही प्रयोग हुआ है। अन्य वाक्यों का शुद्ध रूप निम्न प्रकार है—

(A) उसने गुरु चरणों में नमन किया।

अथवा

उसने गुरु चरणों में अपना सिर नवाया।

(C) आत्मा में बल होना चाहिए।

(C) बजट पर बहस होगी।

8. अल्पविराम चिह्न के प्रयोग के संदर्भ में असंगत कथन है—

(A) समानाधिकरण शब्दों के मध्य अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(B) जब कई शब्द भेद जोड़े से आते हैं, तब प्रत्येक जोड़े के मध्य अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(C) संबोधन कारक की संज्ञा और संबोधन शब्दों के पश्चात्अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(A) आकृति (B) कलह
(C) विकार (D) युद्ध **[C]**

व्याख्या—'विग्रह' शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। जैसे - **'देवता की मूर्ति या आकृति'**, **'लड़ाई या कलह'**, **'युद्ध'** और व्याकरण में **'सामासिक पदों को अलग करना'**। **'विकार'** का अर्थ होता है दोष, परिवर्तन या खराबी।

144. किस शब्द में सर्वाधिक उपसर्ग हैं?
(A) अत्याधुनिक (B) दुस्साहसी
(C) दुर्व्यवहार (D) अलौकिकता **[C]**

व्याख्या—**'दुर्व्यवहार'** शब्द में सर्वाधिक (तीन) उपसर्ग हैं। इसका विच्छेद इस प्रकार है—
दुर् + वि + अव + हार
यहाँ **'हार'** मूल शब्द है और **'दुर्'**, **'वि'** तथा **'अव'** तीन उपसर्ग क्रमशः जुड़े हुए हैं।

145. 'अपने कुल का सबसे श्रेष्ठ या प्रतिष्ठित व्यक्ति' के लिए सार्थक शब्द है—
(A) कुलांगार (B) कुलंजन
(C) कुलकानि (D) कुलकेतु **[D]**

व्याख्या—**'अपने कुल का सबसे श्रेष्ठ या प्रतिष्ठित व्यक्ति'** के लिए सार्थक शब्द **'कुलकेतु'** है। **'कुल'** का अर्थ है वंश और **'केतु'** का अर्थ है ध्वजा या पताका। जिस प्रकार ध्वजा सबसे ऊपर लहराती है, उसी प्रकार कुल का प्रतिष्ठित व्यक्ति भी कुल का मान बढ़ाता है, अतः उसे **'कुलकेतु'** कहते हैं।

146. निम्नलिखित में से वाक्य-रचना में पदक्रम की दृष्टि से असंगत कथन है—
(A) समानाधिकरण शब्द मुख्य शब्द के पीछे आता है और पिछले शब्द में विभक्ति का प्रयोग होता है।
(B) प्रश्नवाचक क्रिया-विशेषण और सर्वनाम अवधारण के लिये मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया के बीच में भी आ सकते हैं।
(C) द्विकर्मक क्रियाओं में मुख्य कर्म पहले और गौण कर्म पीछे आता है।
(D) प्रश्नवाचक अव्यय **'न'** वाक्य के अंत में आता है। **[C]**

व्याख्या—कथन (C) पदक्रम की दृष्टि से असंगत है। हिंदी वाक्य रचना के नियम के अनुसार, द्विकर्मक क्रियाओं वाले वाक्यों में गौण कर्म **(प्राणीवाचक, विभक्ति सहित)** पहले आता है और मुख्य कर्म **(वस्तुवाचक, विभक्ति रहित)** बाद में आता है।
✧ **उदाहरण** – माँ ने **बच्चे को** (गौण कर्म) **दूध** (मुख्य कर्म) पिलाया।

147. निम्नलिखित में से किस विकल्प में समश्रुत भिन्नार्थक शब्दों का अर्थ संगत नहीं है?
(A) अनुदित – अनूदित = भाषांतरित – अकथनीय
(B) पृष्ट – पृष्ठ = पूछा हुआ – पीठ
(C) निहत – निहित = नष्ट – छिपा हुआ
(D) उत्पल – उपल = कमल – रत्न **[A]**

व्याख्या—विकल्प (A) में समश्रुत भिन्नार्थक शब्दों का अर्थ असंगत है।

148. निम्न में से संकेतवाचक वाक्य की पहचान कीजिए—
(A) भारत एक महान देश है।
(B) वह घर नहीं गया था।
(C) यदि तुम आओगे तो मैं तुम्हारे साथ चल पड़ूंगा।
(D) वह लिखता होगा, पर हमें क्या मालूम? **[C]**

व्याख्या—विकल्प (C) एक संकेतवाचक **(या शर्तवाचक)** वाक्य है। इन वाक्यों में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर करता है, जो एक शर्त या संकेत के रूप में व्यक्त की जाती है। **'यदि...तो'**, **'अगर...तो'** जैसे योजक शब्दों का प्रयोग इनकी पहचान है।

149. निम्नलिखित वाक्यों और वाक्य-भेदों को सुमेलित कीजिए—

(अ)	पिताजी के साथ संभवतः वह भी आए।	(i) आज्ञावाचक वाक्य
(ब)	आपको जन्मदिन पर हार्दिक बधाई।	(ii) इच्छावाचक वाक्य
(स)	पुस्तकालय में बातचीत मत करो।	(iii) संकेतवाचक वाक्य
(द)	अगर रुपए होते तो पुस्तकें खरीद लेता।	(iv) संदेहवाचक वाक्य

उत्तर विकल्प—

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(D)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

[C]

व्याख्या—वाक्यों और उनके भेदों का सही सुमेलन इस प्रकार है:

(अ)	पिताजी के साथ संभवतः वह भी आए। '!	(iv) संदेहवाचक वाक्य
(ब)	आपको जन्मदिन पर हार्दिक बधाई। '!	(ii) इच्छावाचक वाक्य
(स)	पुस्तकालय में बातचीत मत करो। '!	(i) आज्ञावाचक वाक्य
(द)	अगर रुपए होते तो पुस्तकें खरीद लेता। '!	(iii) संकेतवाचक वाक्य

150. इनमें से सरल वाक्य नहीं है—
(A) दिन का थका हुआ आदमी रात को खूब सोता है।
(B) वहाँ जो कुछ देखने योग्य था, मैंने सब देख लिया।
(C) धीरे-धीरे उजाला होने लगा।
(D) जहाज का सबसे ऊपर का हिस्सा सबसे पहले दिखाई देता है। **[B]**

व्याख्या—**वहाँ जो कुछ देखने योग्य था, मैंने सब देख लिया।** यह एक सरल वाक्य नहीं है, बल्कि एक मिश्र वाक्य है। इसमें **'मैंने सब देख लिया'** एक प्रधान उपवाक्य है और **'जो कुछ देखने योग्य था'** एक आश्रित विशेषण उपवाक्य है। सरल वाक्य में केवल एक ही मुख्य क्रिया (**समापिका क्रिया**) होती है।

खंड-प्रथम : माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर

1 वर्ण-व्यवस्था
स्वर व व्यंजनों का वर्गीकरण

- **वर्ण**—हिंदी भाषा की सबसे छोटी लिखित इकाई वर्ण कहलाती है। या देवनागरी लिपि में भाषा की सबसे छोटी इकाई को ही **वर्ण** कहते हैं। दूसरे शब्दों में **'स्वर एवं व्यंजन'** के सम्मिलित रूप को ही वर्ण कहा जाता है।'
- **भाषा**—भाषा स्वयं में एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा अपने भावों या विचारों को कभी लिखकर या कभी बोलकर दूसरों तक पहुँचाते हैं तथा दूसरों के भावों या विचारों को स्वयं जानने का प्रयास करते हैं। मनुष्य अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए भाषा को माध्यम बनाता है।
- हिन्दी भाषा व देवनागरी लिपि का एक घनिष्ठतम सम्बन्ध है। भाषा के मौखिक या उच्चरित रूप को स्थायित्व देने हेतु लिपि अपने आप में एक समर्थ साधन है।
- **लिपि**—प्रत्येक ध्वनि के लिए लिखित चिह्न या वर्ण बनाए गए। वर्णों की इसी व्यवस्था को लिपि कहा जाता है। वास्तव में **'लिपि'** ध्वनियों को लिखकर भाषा को प्रकट करने का एक ढंग है।
- संसार में विभिन्न भाषाओं की विभिन्न लिपियाँ प्रचलित हैं। **हिन्दी, मराठी, नेपाली और संस्कृत भाषाएँ देवनागरी लिपि** में लिखी जाती हैं। देवनागरी लिपि का विकास **'ब्राह्मी लिपि'** से हुआ है।
- देवनागरी लिपि **'हिन्दी भाषा'** के स्थायित्व की दृष्टि से अत्यन्त परिमार्जित, परिष्कृत व वैज्ञानिक लिपि है। **देवनागरी लिपि का प्रयोग बाईं से दाईं ओर किया जाता है।**
- **स्वन**—अन्य ध्वनियों से भाषिक ध्वनियों को अलग करने के उद्देश्य से ही भाषिक ध्वनियों को भाषा विज्ञान में **'स्वन'** कहा जाता है। अतः **'क', 'म', 'त'** आदि हिंदी के **'स्वन'** हैं।
- भाषा की ये ध्वनियाँ या स्वन दो प्रकार के होते हैं - एक **'स्वर'** तथा दूसरे **'व्यंजन'**।
- **वर्ण चिह्न**—प्रत्येक भाषा में ध्वनियों का संबंध उच्चारण से होता है। इन्हीं उच्चरित ध्वनियों को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए **'वर्ण चिह्न'** बनाए जाते हैं।

वर्ण व अक्षर

- **''वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं जिसको अन्य खण्डों में विभाजित नहीं किया जा सकता है।''** अथवा भाषा की वह लघुतम इकाई, जिसके पुनः दो भाग न किए जा सकें, वर्ण कहते हैं। **'वर्ण भाषिक ध्वनियों के लिखित रूप होते हैं।'** इन्हीं वर्णों को **'अक्षर'** कहा जाता है।

ध्वनि

- वर्ण व अक्षर एक ही अर्थ के वाची हैं। किसी भी भाषा का निर्माण वर्ण या ध्वनि की सहायता से होता है। सभी वर्ण जब मानव **वाणी (जिह्वा)** का आधार लेते हैं तभी ध्वनियों का जन्म होता है। इनका लिखित रूप वर्ण होता है।
- मनुष्य जब बोलता है तो उसके मुख विवर से वायु निकलती है जो वागेन्द्रिय के द्वारा कुछ वाणी प्रकट करती है, उसी को **'ध्वनि'** कहा जाता है। ध्वनि भाषा का मूल आधार है और ध्वनि चिह्नों के समूह का नाम भाषा है। ध्वनि ही **वाणी, वाक्, बोली** आदि के रूप में व्यक्त होती है।
- अनेक ध्वनि चिह्नों में भाषा की भिन्नता के बाद भी समानता रहती है। इसके विपरीत हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में वर्ण-भेद रहता है। वर्णों का प्रयोग लिखित भाषा में अधिक होता है, जबकि ध्वनि का प्रयोग बोलने सुनने में होता है।

हिन्दी वर्णमाला

- **हिन्दी की वर्ण ध्वनियों के उच्चारण समूह को ही वर्णमाला कहते हैं।**

अथवा

- **किसी भी भाषा के वर्णों का वह समूह, जिनसे शब्द व भाषा का निर्माण किया जाता है, वर्णमाला कहलाती है।**

✧ **44 वर्णों का विभाजन**

स्वर वर्ण	11
व्यंजन वर्ण (स्पर्श व्यंजन)	25
अंतस्थ व्यंजन	04
ऊष्म व्यंजन	04
	44

- हिन्दी में निम्नलिखित **63** ध्वनियाँ प्रचलित हैं—
- **स्वर—**मूलस्वर—**'अ', 'आ', 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ', 'ए, 'ओ' = 8**
  ऐ (अय), **औ** (अव) = **2**
- **व्यंजन—**

स्पर्श—**क्** (क़्)	ख्	ग्	घ्	ङ्		
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्		
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्		
त्	थ्	द्	ध्	न्		
प्	फ्	ब्	भ्	म	= 25 + 1	= **26**

संघर्षी—ह, ख़्, ग़्, स्, श्, ज़्, फ़्, व् = **8**

स्पर्शी-संघर्षी—च्, छ्, ज्, झ् = **4**

नासिक्य—ङ्, ञ्, ण्, न्, न्ह्, म्, म्ह् = **7**

पार्श्विक—ल्, (ल्ह्) = **2**

लुंठित—र् (र्ह्) (प्रकंपित) = **2**

उत्क्षिप्त—ड़, ढ़ = **2**

संघर्षहीन, श्रुतिमूलक—य्, व् = **2**

कुल 63

महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

निर्देश—निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए शब्दों को हिन्दी शब्दकोश के क्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. सही शब्दकोश क्रम का चयन कीजिए—
(A) कमल, कलम, कंगन, कपट
(B) कंगन, कपट, कमल, कलम
(C) कपट, कंगन, कलम, कमल
(D) कलम, कमल, कंगन, कपट **[B]**

2. सही शब्दकोश क्रम वाला समूह है—
(A) छाता, छाया, छानना, छाँव
(B) छानना, छाता, छाँव, छाया
(C) छाँव, छाता, छाया, छानना
(D) छाता, छानना, छाँव, छाया **[D]**

3. निम्नलिखित में से कौन सा क्रम सही है?
(A) क्षमा, क्षीण, क्षत्रिय, क्षण
(B) क्षण, क्षत्रिय, क्षमा, क्षीण
(C) क्षत्रिय, क्षण, क्षमा, क्षीण
(D) क्षीण, क्षमा, क्षत्रिय, क्षण **[B]**

4. 'त्र' वर्ण से बनने वाले शब्दों का सही क्रम चुनें—
(A) त्रिकोण, त्रिदेव, त्रिशूल, त्रिलोचन
(B) त्रिदेव, त्रिकोण, त्रिलोचन, त्रिशूल
(C) त्रिलोचन, त्रिकोण, त्रिदेव, त्रिशूल
(D) त्रिशूल, त्रिलोचन, त्रिदेव, त्रिकोण **[B]**

5. सही क्रम कौन सा है?
(A) ज्ञान, ज्ञात, ज्ञानी, ज्ञानवान
(B) ज्ञात, ज्ञान, ज्ञानवान, ज्ञानी
(C) ज्ञानवान, ज्ञान, ज्ञानी, ज्ञात
(D) ज्ञानी, ज्ञानवान, ज्ञात, ज्ञान **[B]**

6. निम्न शब्दों को शब्दकोश क्रम में व्यवस्थित कीजिए—
(i) कंठ (ii) कंधा (iii) कर्म (iv) कलश
(A) (iv), (i), (ii), (iii)
(B) (i), (ii), (iii), (iv)
(C) (iv), (iii), (ii), (i)
(D) (i), (iii), (ii), (iv) **[A]**

7. दिए गए शब्दों का सही शब्दकोश क्रम है—
(A) अहंकार, अहित, अहसास, अहार
(B) अहसास, अहंकार, अहार, अहित
(C) अहार, अहंकार, अहित, अहसास
(D) अहित, अहंकार, अहार, अहसास **[B]**

8. 'प' वर्ण से शुरू होने वाले शब्दों का सही क्रम है—
(A) पत्ता, पंक्ति, पक्षी, परदा (B) पंक्ति, पक्षी, पत्ता, परदा
(C) पक्षी, पंक्ति, पत्ता, परदा (D) परदा, पत्ता, पंक्ति, पक्षी **[B]**

9. निम्न में से कौन सा क्रम सही है?
(A) गंगा, गंध, गज, गमन (B) गज, गंध, गंगा, गमन
(C) गंध, गंगा, गज, गमन (D) गमन, गंगा, गंध, गज **[B]**

10. निम्न में से कौन सा समूह शब्दकोश क्रम के अनुसार है?
(A) अँगुली, अंगूर, अंधेर, अंजर
(B) अंजर, अँगुली, अंधेर, अंगूर
(C) अंगूर, अँगुली, अंजर, अंधेर
(D) अंधेर, अंजर, अँगुली, अंगूर **[B]**

11. 'द' वर्ण से शुरू होने वाले शब्दों का सही क्रम है—
(A) दर्पण, दंड, दरिद्र, दया (B) दंड, दर्पण, दरिद्र, दया
(C) दया, दंड, दर्पण, दरिद्र (D) दरिद्र, दया, दंड, दर्पण **[B]**

12. दिए गए शब्दों को सही क्रम में रखें—
(i) ऋचा (ii) ऋतु (iii) ऋण (iv) ऋषि
(A) (iii), (i), (ii), (iv) (B) (iii), (iv), (ii), (i)
(C) (i), (ii), (iii), (iv) (D) (ii), (iii), (i), (iv) **[B]**

13. सही शब्दकोश क्रम का चयन कीजिए—
(A) स्वार्थ, स्वतंत्र, स्वीकार, स्वागत
(B) स्वागत, स्वीकार, स्वार्थ, स्वतंत्र
(C) स्वतंत्र, स्वार्थ, स्वीकार, स्वागत
(D) स्वीकार, स्वागत, स्वतंत्र, स्वार्थ **[D]**

14. 'ह' वर्ण से शुरू होने वाले शब्दों का सही क्रम है—
(A) हँसी, हथौड़ा, हृदय, हवन
(B) हथौड़ा, हवन, हँसी, हृदय
(C) हवन, हँसी, हथौड़ा, हृदय
(D) हृदय, हवन, हँसी, हथौड़ा **[C]**

15. कौन सा विकल्प शब्दकोश क्रम के अनुसार है?
(A) कर्मठ, कर्ज, कर्तव्य, कर्मा
(B) कर्ज, कर्मठ, कर्तव्य, कर्मा
(C) कर्तव्य, कर्ज, कर्मठ, कर्मा
(D) कर्मा, कर्मठ, कर्ज, कर्तव्य **[B]**

16. 'ध' वर्ण से शुरू होने वाले शब्दों का सही क्रम है—
(A) धर्म, धरती, धनिया, ध्यान (B) धनिया, धरती, धर्म, ध्यान
(C) धरती, धर्म, धनिया, ध्यान (D) ध्यान, धरती, धर्म, धनिया **[B]**

17. 'ज' वर्ण से शुरू होने वाले शब्दों का सही क्रम है—
(A) जंगल, जन्म, जागरण, जीवन
(B) जागरण, जंगल, जन्म, जीवन
(C) जन्म, जंगल, जागरण, जीवन
(D) जीवन, जागरण, जंगल, जन्म **[B]**

18. सही शब्दकोश क्रम वाला समूह है—
(A) न्याय, न्यास, न्यून, न्यारा (B) न्यास, न्याय, न्यारा, न्यून
(C) न्यारा, न्यास, न्याय, न्यून (D) न्यून, न्यारा, न्यास, न्याय **[A]**

19. 'अ' से शुरू होने वाले शब्दों का सही क्रम है—
(A) अंक, अंग, अंडा, अंत (B) अंग, अंक, अंत, अंडा
(C) अंत, अंक, अंग, अंडा (D) अंडा, अंक, अंग, अंत **[A]**

20. 'म' वर्ण से शुरू होने वाले शब्दों का सही क्रम है—
(A) मंगल, मन, मछली, मकान (B) मछली, मकान, मन, मंगल
(C) मन, मकान, मछली, मंगल (D) मकान, मछली, मन, मंगल **[B]**

1 शब्द शक्तियाँ, भेद व उदाहरण

शब्द शक्ति का अर्थ और परिभाषा- शब्द शक्ति का अर्थ है- शब्द की अभिव्यंजक शक्ति। शब्द का कार्य किसी अर्थ की अभिव्यक्ति तथा उसका बोध कराना होता है।

इस प्रकार शब्द एवं अर्थ का अभिन्न सम्बन्ध है। शब्द एवं अर्थ का सम्बन्ध ही **शब्द शक्ति** है।

शब्दार्थ सम्बन्ध शक्ति। अर्थात् (बोधक) शब्द एवं बोध्य अर्थ के सम्बन्ध को शब्द शक्ति कहते हैं।

शब्द शक्ति की परिभाषा इस प्रकार भी की जा सकती है- शब्दों के अर्थों का बोध कराने वाले अर्थ-व्यापार को शब्द शक्ति कहते हैं।

शब्द शक्ति के भेद—शब्द के विभिन्न प्रकार के अर्थों के आधार पर शब्द शक्ति के प्रकारों का निर्धारण किया गया है।

शब्द के जितने प्रकार के अर्थ होते हैं, भाषा के जितने प्रकार के अभिप्राय होते हैं, उतने ही प्रकार की शब्द शक्तियाँ होती हैं।

शब्द के तीन प्रकार के अर्थ स्वीकार किए गए हैं— **1. वाच्यार्थ या अभिधेयार्थ, 2. लक्ष्यार्थ, 3. व्यंग्यार्थ।**

इस अर्थों के आधार पर तीन प्रकार की शब्द शक्तियाँ मानी गई हैं— **(1) अभिधा, (2) लक्षणा, (3) व्यंजना।**

कुछ विद्वानों ने तात्पर्या नामक चौथी शब्द शक्ति भी स्वीकार की है, जिसका सम्बन्ध वाक्य से होता है।

1. अभिधा शब्द शक्ति

परिभाषा—शब्द को सुनने अथवा पढ़ने के पश्चात् पाठक अथवा श्रोता को शब्द का जो लोक प्रसिद्ध अर्थ तत्क्षण ज्ञात हो जाता है, वह अर्थ शब्द की जिस सीमा द्वारा मालूम होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।

'अभिधा' द्वारा अनेकार्थ में एकार्थ का निर्णय अनेक प्रकार से हुआ करता है।

इसी आधार पर विद्वान् अभिधा के बारह या तेरह भेद करते हैं।

काव्य-प्रभाकर पुस्तक में इन भेदों का वर्णन इस प्रकार किया गया है—

है संजोग, वियोग अरु साहचरज सु विरोध।
प्रकरन, अरथ-प्रसंग पुनि चिह्न सामरथ बोध।।
औचित्यहु पुनि देस-बल काल भेद सुर फेर।
द्वादस अभिधा शक्ति के भेद कहैं कवि हेर।।

अभिधा शब्द शक्ति के अन्य उदाहरण—

1. वास्तुकार ने भवन का विस्तृत नक्शा बनाया।
2. गाय घास खाती है।
3. हरि ने नारद को हरि रूप दिया।
4. परम रम्य आराम यह जो रामहिं सुख देत।
5. न्यायाधीश ने अभियुक्त के विरुद्ध निर्णय सुनाया।
6. खगोलशास्त्री दूरबीन से आकाशगंगा का निरीक्षण कर रहे हैं।
7. कोशिका जीव शरीर की मूलभूत संरचनात्मक इकाई है।
8. अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति का प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है।
9. पुरातत्वविदों को उत्खनन में एक प्राचीन मुद्रा मिली।

2. लक्षणा शब्द शक्ति

परिभाषा—जहाँ मुख्य अर्थ में बाधा उपस्थित होने पर रुढि अथवा प्रयोजन के आधार पर मुख्य अर्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ को लक्ष्य किया जाता है, वहाँ लक्षणा शब्द शक्ति होती है। जैसे- **मोहन गधा है।** यहाँ 'गधे' का लक्ष्यार्थ है 'मूर्ख'।

1. मुख्यार्थ में बाधा या व्याघात हो अर्थात् शब्द का प्रचलित अर्थ लेने में व्याघात उत्पन्न होता हो।
2. लिया गया अन्य अर्थ मुख्यार्थ से सम्बन्धित हो।
3. इस लक्ष्यार्थ को ग्रहण करने का या तो कोई प्रयोजन हो अथवा कोई रूढ़ि। भिखारीदास जी इस तथ्य को इस प्रकार कहते हैं—

मुख्य अर्थ को बाध करि, सब्द लच्छना होत।
रूढि और प्रयोजनवती, है लच्छना उदोत।।

लक्षणा शब्द शक्ति के भेद

1. **लक्ष्यार्थ के आधार पर**
2. **मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ के सम्बन्ध के आधार पर**
3. **मुख्यार्थ है या नहीं के आधार पर लक्षणा के भेद**
4. **सारोपा एवं साध्यवसाना लक्षणा**

1. लक्ष्यार्थ के आधार पर भेद—

इस आधार को लेकर लक्षणा के दो भेद हैं—

(i) रूढ़ा लक्षणा (ii) प्रयोजनवती लक्षणा।

(i) रूढ़ा लक्षणा—जहाँ मुख्यार्थ में बाधा होने पर रूढि के आधार पर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है, वहाँ रूढा लक्षणा होती है। जब किसी रूढ़ि या प्रचलन के कारण मुख्यार्थ को छोड़कर कोई अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है। तब वहाँ रूढ़ा लक्षणा मानी जाती है।

मुहावरे व लोकोक्तियों में रूढ़ा लक्षणा होती है। जैसे—

1. भाग जग्यो उमगो उर आली, उदै भयो है अनुराग हमारो।
2. देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार रखा रोई नहीं।

रूढ़ा लक्षणा शब्द शक्ति के अन्य उदाहरण—

1. **पंजाब वीर है**-इस वाक्य में पंजाब का लक्ष्यार्थ है - पंजाब के निवासी। यह अर्थ रूढ़ि के आधार पर ग्रहण किया गया है, अतः रूढा लक्षणा है।
2. **'राजस्थान वीर देश है'**-इस वाक्य में मुख्यार्थ की बाधा होती है क्योंकि कोई प्रान्त स्वयं वीर नहीं हो सकता। **'राजस्थान के निवासी वीर हैं'** ऐसा अर्थ लक्षणा द्वारा ग्रहण किया जाता है, अतः यहाँ रूढ़ि लक्षणा है।
3. जायसी के पद्मावत का उदाहरण—
   'करहि तुषार पवन सों रीसा'
   यहाँ पर तुषार का अर्थ दंश से न लेकर उस देश के घोड़े से लिया गया है अतः रूढ़ि लक्षणा है।

(C) उपादान - लक्षणा (D) लक्षण - लक्षणा [C]

6. शब्द-शक्ति के संबंध में असंगत कथन कौनसा है?
[II Grade • 22-12-2022]
(A) जब वाच्यार्थ सर्वथा परित्यक्त नहीं होता, तब उपादान लक्षणा होती है।
(B) जब व्यंजना शब्द में हो तथा शब्द बदल देने से व्यंग्यार्थ नष्ट हो जाए तब शाब्दी व्यंजना होती है।
(C) जब व्यंजना शब्द और अर्थ दोनों में हो तब आर्थी व्यंजना होती है।
(D) जब लक्ष्यार्थ में वाच्यार्थ सम्मिलित नहीं होता तब लक्षण-लक्षणा शब्द शक्ति होती है। [*]

7. शब्द शक्तियों के संदर्भ में इनमें से कौनसा कथन गलत है?
[II Grade • 04-07-2019]
(A) जब लक्ष्यार्थ में वाच्यार्थ सम्मिलित रहता है तब लक्षण-लक्षणा होती है।
(B) जहाँ शब्द बदल देने पर भी व्यंग्यार्थ निकलता हो वहाँ आर्थी व्यंजना होती है।
(C) योगरूढ़ शब्द उसे कहते हैं जिसकी व्युत्पत्ति होती है पर जिसका अर्थ व्युत्पत्तिजन्य अनेक अर्थों में से केवल एक तक ही सीमित हो जाता है।
(D) जो व्यंग्यार्थ प्रकट करे उसे व्यंजक शब्द कहते हैं। [A]

8. 'शब्द-शक्तियों' से संबंधित कौन-सा कथन असंगत है?
[II Grade (San.) • 20-02-2019]
(A) 'अभिधा' शब्द-शक्ति किसी शब्द के मुख्यार्थ या वाच्यार्थ का बोध कराती है।
(B) साक्षात् संकेतित अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति 'व्यंजना' कहलाती है।
(C) 'लक्षणा' शक्ति लक्ष्यार्थ का बोध कराती है।
(D) 'व्यंजना' शब्द-शक्ति द्वारा निष्पन्न अर्थ व्यंग्यार्थ भी कहलाता है। [B]

9. लक्षणा शब्द-शक्ति के संबंध में कौनसा कथन सही नहीं है—
[II Grade • 01-11-2018]
(A) इसमें वाच्यार्थ के बाधित होने पर अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है।
(B) यह अन्य अर्थ रूढ़ि या प्रयोजन पर आधारित होता है।
(C) इस अन्य अर्थ (लक्ष्यार्थ) का वाच्यार्थ से कोई संबंध नहीं होता।
(D) 'रूढ़ि लक्षणा' और 'प्रयोजनवती लक्षणा' इसके मुख्य भेद हैं। [C]

10. शब्द में अन्तर्निहित अर्थ को व्यक्त करने वाले व्यापार को क्या कहते हैं?
[II Grade • 01-07-2017]
(A) काव्य गुण (B) काव्य रीति
(C) शब्द शक्ति (D) अलंकार [C]

11. ''सघन कुंज, छाया सुखद, सीतल मंद समीर।
मन ह्वै जात अजौ वहै, वा यमुना के तीर।।''
पंक्तियों में शब्द शक्ति है—
[II Grade • 01-07-2017]
(A) रूढ़ि लक्षणा (B) प्रयोजनवती लक्षणा
(C) शाब्दी व्यंजना (D) आर्थी व्यंजना [D]

12. निम्नलिखित दोहे में कौनसी शब्द शक्ति का चमत्कार द्रष्टव्य है?
चिर जीवो, जोरी जुरै, क्यों न सनेह गम्भीर।
को घटि ? ए वृषभानुजा वे हलधर के बीर।।
[II Grade • 23-02-2014]
(A) आर्थी व्यंजना (B) शाब्दी व्यंजना
(C) उपादान लक्षणा (D) लक्षण लक्षणा [B]

13. लक्षणा शब्द-शक्ति का लक्षण नहीं है—[II Grade • 23-12-2011]
(A) साक्षात संकेतित अर्थ (B) मुख्यार्थ में बाधा
(C) मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ का योग
(D) रूढ़ि या प्रयोजन [A]

14. ''कनक कनक तें सौगुनी मादकता अधिकाय।
या खायै बौराय जग, वा पाये बौराय।।''
इन पंक्तियों में किस शब्द-शक्ति का प्रयोग हुआ है?
[II Grade • 23-12-2011]
(A) अभिधा (B) रूढ़िलक्षणा
(C) प्रयोजनवती लक्षणा (D) आर्थी व्यंजना [A]

अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

1. 'पंजाब वीर है', इस वाक्य में 'पंजाब' शब्द का लक्ष्यार्थ है—
(A) पंजाब के निवासी (B) पंजाब के बच्चे
(C) पंजाब की वेश-भूषा (D) पंजाब की महिलाएँ [A]

2. 'प्रयोजनवती लक्षणा' का उदाहरण है—
(A) मोहन पढ़ता नहीं है। (B) मोहन उद्दण्ड है।
(C) मोहन गधा है। (D) उपर्युक्त सभी। [C]

3. व्यंजना शब्द शक्ति के मुख्यतः भेद हैं—
(A) चार (B) तीन (C) दो (D) पाँच [C]

4. मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ के सम्बन्ध के आधार पर लक्षणा के भेद हैं—
(A) गौणी लक्षणा, शुद्धा लक्षणा (B) रूढ़ा लक्षणा, उपादान लक्षणा
(C) सारोपा लक्षणा, शुद्धा लक्षणा (D) इनमें से कोई नहीं [A]

5. 'मोहन शेर है', यह उदाहरण है—
(A) शुद्धा लक्षणा का (B) गौणी लक्षणा का
(C) रूढ़ा लक्षणा का (D) प्रयोजनवती लक्षणा का [B]

6. 'कोटि मनोज लजावन हारे, सुमुखि कहहिं को आहि तुम्हारे
सुनि सनेहमय मंजुल बानी, सकुचि सीय मन महँ मुसकानी।।'
पंक्तियों में व्यंजना है—
(A) आर्थी व्यंजना (B) शाब्दी व्यंजना
(C) रस व्यंजना (D) उपर्युक्त सभी [A]

7. ''चिरजीवौ जोरी जुरै क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि ए वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।।'' इस दोहे में है—
(A) अभिधामूला शाब्दी व्यंजना (B) लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना
(C) प्रयोजनवती सारोपा लक्षणा (D) गौणी साध्यवसाना लक्षणा [A]

8. ''यह लड़की तो निरी गाय है।'' इस पंक्ति में शब्द शक्ति है—
(A) अभिधा (B) प्रयोजनवती लक्षणा
(C) रूढ़ि लक्षणा (D) व्यंजना [B]

9. ''मुख्यार्थ बाधे तद्योगे रूढ़ितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्यार्थो लक्ष्यते (तत्र) लक्षणा रोपिताक्रिया।''
लक्षणा को इस प्रकार परिभाषित किया है—
(A) मम्मट ने (B) भामह ने
(C) विश्वनाथ ने (D) जगन्नाथ ने [A]

2 काव्य-गुण, भेद व उदाहरण

काव्य गुण की परिभाषा

लक्षण—वस्तु की उत्कर्षताधायक विशेषता को गुण कहा जाता है। काव्य की आत्मा रस के उत्कर्ष का विधान करने वाले तत्व गुण कहलाते हैं। भरतमुनि दस काव्य गुण मानते हैं—**श्लेष, प्रसाद, समता, माधुर्य, सुकुमारता, अर्थव्यक्ति, उदारता, ओज, कान्ति और समाधि।**

- **अग्निपुराण** – इसमें 18 काव्यगुण माने गये हैं।
  शब्द गुण 6 – श्लेष, लालित्य, गांभीर्य, सुकुमारता, औदार्य, ओज
  अर्थ गुण 6 – माधुर्य, उदारता, प्रौढ़ि, कोमलता, संविधान, सामयिकता
  शब्दार्थ गुण 6 – सौभाग्य, यथासंख्य, प्राशस्त्य, राग, वैराग्य, पाक
- **वामन** – 8वीं शताब्दी में सर्वप्रथम सुस्पष्ट लक्षण काव्य गुण बताए हैं। 20 गुण माने (10 शब्द गुण + 10 अर्थ गुण)
- **आनंदवर्धन** – ध्वन्यालोक
  काव्य गुणों की संख्या 3 मानी है।
  1. दुति (पिघलना) (माधुर्य)
  2. दीप्ति (ओजस्विता का संचार) (ओज)
  3. व्यापकत्व (फैलना) प्रसाद
- **आचार्य कुन्तक** – वक्रोक्ति जीवितम्
  सिर्फ 2 गुण माने हैं-
  1. सामान्य गुण – औचित्य, सौभाग्य
  2. विशेष गुण – अभिजात्य, लावण्य, माधुर्य, प्रसाद
- **आचार्य भोजराज** –
  इन्होंने 72 गुण माने हैं।
- **आचार्य मम्मट** – काव्य प्रकाश
  काव्य गुणों की संख्या 3 मानी है। इनका मत सभी को मान्य हैं।
  1. ओज 2. प्रसाद 3. माधुर्य
- **आचार्य विश्वनाथ** – साहित्यदर्पण में इन्होनें 3 काव्य गुण माने हैं।
- **आचार्य जगन्नाथ** – रसगंगाधर
  इन्होंने 3 काव्य गुण माने है।
  सार्वभौमिक दृष्टि से काव्य गुण की संख्या 3 ही है।
- हिंदी के आचार्यों में देव ने भरतमुनि व दंडी के 10 गुणों को मानते हुए यमक हुए यमक और अनुप्रास मिलाकर कुल 12 गुण बताए हैं।

दण्डी भी दस काव्य गुण मानते हैं। आचार्य वामन दस शब्द गुण व दस अर्थ गुण मानते हैं। अन्त में आचार्य मम्मट व विश्वनाथ आदि सभी गुणों का अंतर्भाव तीन गुणों के अन्तर्गत ही कर देते हैं। वे तीन गुण हैं—**माधुर्य, ओज, प्रसाद।** इस संबंध में भिखारीदास जी लक्षण देते हैं।

''मधुर ओज प्रसाद के सब गुण हैं आधीन,
तातें इन ही को गन्यो, मम्मट सुकवि प्रवीन।''

(1) माधुर्य गुण

माधुर्य गुण के लक्षण—माधुर्य काव्य का वह गुण है जो चित्त तो पिघलाकर उसे आह्लादित बना देता है। माधुर्य का अर्थ है मिठास। माधुर्य युक्त रचना को पढ़ने से मन से एक आह्लाद उत्पन्न होता है।

माधुर्य का सम्बन्ध श्रृंगार, करुण और शान्त रसों से होता है।

- अन्तः करण को आनन्द और उल्लास से द्रवित करने वाली कोमल मधुर वर्णों से युक्त रचना माधुर्य गुण सम्पन्न होती है।
- **भरतमुनि** – माधुर्य का अर्थ है श्रुतिमधुरता
- **दण्डी** – माधुर्य का अर्थ श्रृंगार आह्लादकता
- **वामन** – उक्ति वैचित्र्य
- **मम्मट के अनुसार** – आह्लादकता एवं श्रृंगार रस में द्रवित करने की विशेषता।
- **कुन्तक** – समास रहित मनोहारी पद विन्यास माना है।
- इसमें संयुक्ताक्षरों **(क्ष, त्र, ज्ञ, श्र)**, मूर्धन्य व्यंजन (ट वर्ग ट, ठ, ड, ढ, ण) व सामासिक पदों का पूर्ण अभाव पाया जाता है या कम प्रयोग होता है।

माधुर्य गुण की विशेषताएँ

(1) ट, ठ, ड, ढ को छोड़कर अपने पंचम वर्ण से संयुक्त स्पर्श वर्ण;
जैसे- ड्ड, ज्ज, न्द, म्ब आदि।
(2) 'ण' को छोड़कर शेष पंचम वर्ण (ङ, ञ, न्, म्)।
(3) ह्रस्व 'ण' तथा 'र'।
(4) माधुर्य गुण में समास या तो न हों, और यदि हों तो छोटे-छोटे हों।

आचार्य कुन्तक ने सुकुमार और विचित्र मार्ग के मूल में इसकी स्थिति स्वीकार की है। जैसे—

मंद-मंद चढ़ि चल्यौ चैत-निसि चंद-चारु,
मंद-मंद चाँदनी पिसारत लतन तें।
मंद-मंद जमुना-तरंगिनि हिलोरै लेति,
मंद-मंद मोद मंजु-मल्लिका-सुमनतें।।
देवकवि मंद-मंद सीतल सुगन्ध पौन
देखि छवि छीजत मनोज छन-छनते।
मंद-मंद मुरली बजावत अधर धरे
मंद-मंद निकस्यौ मुकुन्द मधुवनतें।।

इस उदाहरण में 'मंद-मंद' की आवृत्ति तथा **म, च, ल** वर्णों के प्रयोग बाहुल्य से माधुर्य गुण की अवस्थिति को स्पष्ट रूप से लक्षित किया जा सकता है।

माधुर्य गुण के अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण

1. मन्द-मन्द मुरली बजावत अधर धरे,
   मन्द-मन्द निकस्यो मधु-बन तें।
2. ''मधुमय वसन्त जीवन-वन के, बहु अन्तरिक्ष की लहरों में।।''

(B) गुण काव्य का नित्य तत्व है।
(C) ये काव्य के शोभाकारक धर्म हैं।
(D) गुणों की कुल संख्या तीन है। **[D]**

4. इनमें से 'माधुर्य गुण' का उदाहरण किस विकल्प में है? [II Grade • 04-07-2019]
(A) बढ़ो करो वीर! स्व जाति का भला, अपार दोनों विधि लाभ हैं हमें।
(B) मैं जो नया ग्रंथ विलोकता हूँ, माता मुझे सो नव मित्र सा है।
(C) चिक्करहिं दिग्गज डोल महि, अहि लोल सागर खर भरे।
मन हरख सभ गंधर्व सुर-मुनि नाग-किन्नर-दुख टारे।
(D) मन्द-मन्द मुरली बजावत अधर धरे,
मन्द-मन्द निकस्यी मुकुन्द मधुबन तें। **[D]**

5. इनमें माधुर्य गुण से संबंधित कौन-सा कथन असंगत है? [II Grade (San.) • 20-02-2019]
(A) माधुर्य गुण में सामान्यतः ट, ठ, ड, ढ वर्णों का अभाव रहता है।
(B) इसमें समास रहित या अल्प-समास-युक्त पदावली होती है।
(C) इसमें चित्त को द्रवित करने की विशेषता होती है।
(D) हास्य और अद्भुत रस में इसका प्रयोग होता है। **[D]**

6. ''काव्यशोभायाः कर्तारो धर्मा गुणाः।'' काव्य गुण की यह परिभाषा किस आचार्य ने प्रस्तुत की है? [II Grade • 01-07-2017]
(A) भामह (B) दंडी
(C) मम्मट (D) वामन **[D]**

**7. ''मधुमय बसन्त जीवन-वन के ! वह अन्तरिक्ष की लहरों में।
कब आये थे तुम चुपके-से, रजनी के पिछले पहरों में?''
उपर्युक्त पंक्तियों में काव्य गुण है—** [II Grade • 01-07-2017]
(A) प्रसाद गुण (B) ओज गुण
(C) माधुर्य गुण (D) ओज और प्रसाद गुण **[C]**

8. ''जैसे सूखी लकड़ी में प्रज्वलित अग्नि सहज एवं शीघ्र समाप्त हो जाती है वैसे ही कोई रचना पढ़ते ही उसका अर्थ चित्त में व्याप्त हो जाता है।'' ऐसी रचना में कौनसा काव्य गुण होता है— [II Grade • 23-02-2014]
(A) कान्ति (B) माधुर्य (C) प्रसाद (D) ओज **[C]**

9. ओज गुण की सृष्टि के लिए किस प्रकार की शब्द योजना की जाती है? [II Grade • 23-12-2011]
(A) श्रुति सुखद वर्ण युक्त
(B) संयुक्त, कर्ण-कटु वर्ण युक्त
(C) कोमल एवं कठोर वर्ण युक्त
(D) अति सरल सुबोध **[B]**

अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

1. किसने लिखा है कि ''जैसे सूखे ईंधन में अग्नि और स्वच्छ वस्त्र में जल तुरन्त फैल जाता है उसी प्रकार चित्त को रसों से तुरन्त युक्त कर दें उसे प्रसाद गुण कहते हैं।''—
(A) कुन्तक (B) वामन
(C) मम्मट (D) हेमचन्द **[C]**

**2. ''कदली सीप, भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन।।''
उपरोक्त उदाहरण में प्रयुक्त काव्य गुण है—**
(A) ओज (B) माधुर्य
(C) प्रसाद (D) समता **[C]**

3. ओज गुण की सृष्टि के लिये किस प्रकार की शब्द योजना की जाती है ?
(A) श्रुति सुखद वर्ण युक्त
(B) संयुक्त, कर्ण-कटु वर्ण युक्त
(C) अति सरल सुबोध
(D) कोमल एवं कठोर वर्ण युक्त **[B]**

4. किस गुण का सम्बन्ध वैदर्भी रीति से है?
(A) ओज (B) माधुर्य
(C) प्रसाद (D) इनमें से कोई नहीं **[B]**

**5. ''रनित भृंग घटावली, झरति दान मधु नीर।
मंद-मंद आवत चल्यौ, कुंजर कुंज समीर।।''
उपरोक्त पंक्तियों में काव्य गुण है—**
(A) ओज (B) माधुर्य
(C) प्रसाद (D) उपर्युक्त सभी **[B]**

**6. कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
विपति कसौटी जे कसे, तेई सांचे मीत।।
उपरोक्त पंक्तियों में काव्य गुण है—**
(A) ओज (B) प्रसाद
(C) माधुर्य (D) उपर्युक्त सभी **[B]**

7. आचार्यों ने ओज गुण को किसके समान बताया है—
(A) जल (B) अग्नि
(C) प्रकाश (D) बादल **[B]**

8. भरत मुनि ने 'नाट्य शास्त्र' में कितने काव्य गुणों का उल्लेख किया है—
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 10 **[D]**

9. आचार्य भामह ने कितने काव्य गुणों का उल्लेख किया है—
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 10 **[A]**

10. दण्डी ने कितने काव्य-गुणों का उल्लेख किया है?
(A) दस (B) इक्कीस
(C) इकतीस (D) पन्द्रह **[A]**

11. माधुर्य गुण की एक विशेषता है—
(A) सुकुमार वर्ण-योजना (B) कठोर वर्ण-योजना
(C) पञ्चम वर्ण-योजना (D) उपर्युक्त सभी **[A]**

12. ''बाज्जिय घोर निसांन रांन चहुँवान चहुँ दिस। सकल सूर सामन्त समरि बल जंत्र मंत्र तस।'' यहाँ काव्य गुण है—
(A) ओज (B) माधुर्य
(C) प्रसाद (D) समता **[A]**

3 काव्य-दोष

(श्रुतिकटुत्व, ग्राम्यत्व, अप्रतीतत्व, क्लिष्टत्व, अक्रमत्व तथा दुष्क्रमत्व)

आचार्य मम्मट ने अपनी काव्य परिभाषा में दोषहीनता को काव्य का एक लक्षण मानते हुए लिखा है—

''तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि''

यहाँ प्रयुक्त 'अदोषौ' का तात्पर्य दोषहीनता से है। **काव्य वह शब्दार्थ है जो दोषहीन, गुणयुक्त और कभी-कभी अलंकार रहित होता है।**

काव्य दोष की परिभाषा

काव्यास्वाद में बाधक उद्वेगजनक तत्त्व काव्य दोष कहलाते हैं—

''उद्वेगजनको दोषः''

ये दोष काव्य के मुख्य अर्थ की प्रतीति में बाधा पहुँचाते हैं। दोष शब्द, अर्थ और रस इन तीनों के सौन्दर्य में व्याघात उत्पन्न करता है।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार, **''रस के अपकर्षक दोष कहलाते हैं।''** काव्य दोषों से काव्य का माधुर्य एवं सौन्दर्य नष्ट हो जाता है और काव्यानन्द में व्याघात पड़ता है। इसीलिए दोषहीन काव्य को उत्तम काव्य माना गया है।

संस्कृत के आचार्यों द्वारा दिये गये लक्षण इस प्रकार हैं—

'गुणंविपर्ययात्मानोदोषाः'। **(आचार्य वामन)**

(गुणों के विरोधी दोष कहलाते हैं।)

'रसापकर्षकाःदोषा।' **(आचार्य विश्वनाथ)**

(रस अर्थात् काव्य के आनन्द को हानि पहुँचाने वाली बातें दोष हैं।)

'मुख्यार्थ-हतिर् दोषः।' **(आचार्य मम्मट)**

(काव्य के मुख्य अर्थ अर्थात् रस की हानि ही दोष है।)

'उद्वेग-जनको दोषः।' **(आचार्य जयदेव)**

(उद्वेग को उत्पन्न करने वाली बात दोष है।)

काव्य दोष के भेद

(1) शब्द-दोष या पद दोष-वह दोष जो किसी शब्द में हो। शब्द को थोड़ा बदल देने से या पर्याय-शब्द द्वारा बदल देने से शब्द-दोष दूर हो जाता है। **उदाहरण-**

(1) 'क्षण भर रहा **उजाला में**'।

यहाँ 'उजाला में' शब्द में च्युतसंस्कृति अर्थात् व्याकरण-विरुद्ध दोष है। तात्पर्य यह है कि 'उजाला में' का प्रयोग व्याकरण के नियमों के विरुद्ध है। सही प्रयोग 'उजाले में' होना चाहिए।

(2) खिले फूल सब **गिरा दिया है।**

यहाँ **फूल** बहुवचन है और **गिरा दिया** है एकवचन है, अतः यह व्याकरण-विरुद्ध दोष है। 'गिरा दिया है' के स्थान पर **'गिरा दिये हैं'** कर देने से दोष दूर हो जायेगा। यहाँ **गिरा दिया** है शब्द स्वतः दूषित नहीं है पर फूल शब्द के साथ आने से दूषित हो गया है।

(2) वाक्य-दोष- जो दोष वाक्य के अनेक (एक से अधिक) शब्दों में, या वाक्य की रचना में हो। प्रथम प्रकार का वाक्य-दोष (शब्द दोष) दूषित शब्दों को बदल देने से और द्वितीय प्रकार का पद दोष वाक्य-रचना को बदल देने से दूर हो जाता है। जैसे-

(1) मंदिर-अरध अवधि हरि बदि गये,
हरि-अहार चलि जात।

इसमें मंदिर-अरध और हरि-अहार का पक्ष और मास अर्थ सहज ही ध्यान में नहीं आता, अतः क्लिष्टत्व दोष है। दो शब्दों में दोष होने से यह वाक्य-दोष हुआ। इसमें दूषित शब्दों को पर्याय शब्दों में (पक्ष और मास से) बदल देने से दोष दूर हो जायेगा।

(2) अमानुषी भूमि अबानरी करौं।

वक्ता का अभिप्राय है कि भूमि को अमानुषी (मनुष्यों से हीन) और अबानरी (बन्दरों से हीन) कर दूँगा; परन्तु उक्त चरण में शब्द-योजना ऐसी है कि अमानुषी भूमि को अबानरी (वानरों से हीन) कर दूँगा, यह अर्थ ध्यान में आता है।

इस प्रकार वाक्य में शब्द-योजना दूषित होने से यहाँ वाक्य दोष हुआ। यहाँ **अमानुषी शब्द** को **भूमि** के बाद कर देने से दोष दूर हो जायेगा। (यद्यपि छन्द बिगड़ जायगा)।

(3) अर्थ-दोष-जो दोष अर्थ से सम्बन्ध रखता है। अर्थ-दोष शब्द या शब्दों को पर्याय-शब्द से बदल देने पर भी बना रहता है। जैसे—

'दृश्य बड़ा था चारु, मंजु सुंदर मनमोहन।'

यहाँ 'मंजु', 'सुंदर' और 'मनमोहन' का वही अर्थ है जो 'चारु' का है। अतः यहाँ अर्थ की पुनरुक्ति हुई है और **पुनरुक्त नामक दोष** है। इन शब्दों को पर्याय शब्दों से बदल देने पर भी दोष बना रहेगा।

टिप्पणी-इनके अतिरिक्त रस-दोष और अलंकार-दोष भी माने गये हैं। वस्तुतः ये दोनों अर्थ-दोष ही हैं।

दोष-परिहार—दोष सदा ही दोष नहीं होते, कभी-कभी वे निर्दोष भी हो जाते हैं और कभी-कभी तो वे गुण भी बन जाते हैं।

अनुकरण में सभी दोष निर्दोष होते हैं। अनुकरण के अतिरिक्त कुछ विशेष स्थितियों में कई दोष निर्दोष हो जाते हैं और अन्य स्थितियों में गुण बन जाते हैं।

कुछ दोष (अनुकरण के अतिरिक्त) कभी निर्दोष नहीं होते। ऐसे दोषों को नित्य-दोष कहते हैं। जैसे-च्युतसंस्कृति, अक्रमत्व आदि।

12 देवनागरी लिपि का मानक स्वरूप

लिपि

- मानव मन के भावों व विचारों की अभिव्यक्ति का साधन भाषा है। भाषा अपने मूल रूप में ध्वनि पर आश्रित है अर्थातब जब यह ध्वनि माध्यम से मुख से उच्चरित होती है तो यह मौखिक भाषा कहलाती है।
- मौखिक भाषा या उच्चरित भाषा को स्थायी रूप देने के लिए भाषा के लिखित रूप का विकास हुआ। प्रत्येक ध्वनि के लिए लिखित चिह्न या वर्ण बनाए गए। वर्गों की इसी व्यवस्था को 'लिपि' कहा जाता है। वास्तव में लिपि ध्वनियों को लिखकर प्रस्तुत करने का ढंग है।
- देवनागरी भारतीय उपमहाद्वीप में प्रयुक्त प्राचीन ब्राह्मी लिपि पर आधारित बाएँ से दाएँ आबूगीदा है। यह प्राचीन भारत में पहली से चौथी शताब्दी ईस्वी तक विकसित किया गया था और 7वीं शताब्दी ईस्वी तक नियमित उपयोग में था।
- देवनागरी लिपि, जिसमें 14 स्वर और 33 व्यंजन सहित 47 प्राथमिक वर्ण हैं, दुनिया में चौथी सबसे व्यापक रूप से अपनाई जाने वाली लेखन प्रणाली है, जिसका उपयोग 120 से अधिक भाषाओं के लिए किया जा रहा हैं।
- इस लिपि की शब्दावली भाषा के उच्चारण को दर्शाती है। रोमन लिपि के विपरीत, इस लिपि में अक्षर केस की कोई अवधारणा नहीं है।
- यह बाएँ से दाएँ लिखा गया है, चौकोर रूपरेखा के भीतर सममित गोल आकृतियों के लिए एक दृढ़ प्राथमिकता है, और एक क्षैतिज रेखा द्वारा पहचाना जा सकता है, जिसे शिरोरेखा के रूप में जाना जाता है, जो पूर्ण अक्षरों के शीर्ष के साथ चलती है।

देवनागरी लिपि का परिचय

- प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है जैसे हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि है। देवनागरी तथा अन्य भारतीय लिपियों का विकास प्रानीचतम भारतीय लिपियों से हुआ है। इस विकासक्रम को समझने के लिए ब्राह्मी लिपि के विकास क्रम को समझना आवश्यक है।
- प्राचीन भारत में दो लिपियाँ व्यवहार में थीं- ब्राह्मी लिपि तथा खरोष्ठी। खरोष्ठी सीमित क्षेत्र की लिपि थी जबकि ब्राह्मी समूचे भारत की लिपि थी। प्राचीन नागरी लिपि के विकसित होने से ही आधुनिक नागरी या देवनागरी लिपि का विकास हुआ।
- नागरी लिपि से ही राजस्थानी महाजनी, गुजराती आदि लिपियाँ विकसित हुई। प्राचीन नागरी लिपि के पश्चिमी रूप से ही देवनागरी लिपि का विकास हुआ।
- अधिकतर भाषाओं की तरह देवनागरी भी बायें से दायें लिखी जाती है। प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खिंची होती है (कुछ वर्णों के ऊपर रेखा नहीं होती है) जिसे शिरोरेखा कहते हैं। देवनागरी का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है जो प्रचलित लिपियों (रोमन, अरबी, चीनी आदि) में सबसे अधिक वैज्ञानिक है। इससे वैज्ञानिक और व्यापक लिपि शायद केवल अध्वव लिपि है।
- भारत की कई लिपियाँ देवनागरी से बहुत अधिक मिलती-जुलती हैं, जैसे—बांग्ला, गुजराती, गुरुमुखी आदि। कंप्यूटर प्रोग्रामों की सहायता से भारतीय लिपियों को परस्पर परिवर्तन बहुत आसान हो गया है।
- भारतीय भाषाओं के किसी भी शब्द या ध्वनि को देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है और फिर लिखे पाठ को लगभग 'हू-ब-हू' उच्चारण किया जा सकता है, जो कि रोमन लिपि और अन्य कई लिपियों में संभव नहीं है।
- इसमें कुल 52 अक्षर हैं, जिसमें 14 स्वर और 38 व्यंजन हैं। अक्षरों की क्रम व्यवस्था (विन्यास) भी बहुत ही वैज्ञानिक है। स्वर-व्यंजन, कोमल-कठोर, अल्पप्राण-महाप्राण, अनुनासिक्य-अंतस्थ-उष्म इत्यादि वर्गीकरण भी वैज्ञानिक हैं। एक मत के अनुसार देवनगर (काशी) में प्रचलन के कारण इसका नाम देवनागरी पड़ा।

देवनागरी शब्द की व्युत्पत्ति

- देवनागरी या नागरी नाम का प्रयोग 'क्यों' प्रारंभ हुआ और इसका व्युत्पत्तिपरक प्रवृत्तिनिमित्त क्या था, यह अब तक पूर्णतः निश्चित नहीं है।
- 'नागर' अपभ्रंश या गुजराती 'नागर' ब्राह्मणों से उसका संबंध बताया गया है। पर दृढ़ प्रमाण के अभाव में यह मत संदिग्ध है।
- दक्षिण में इसका प्राचीन नाम **'नंदिनागरी'** था। हो सकता है 'नंदिनागर' कोई स्थानसूचक हो और इस लिपि का उससे कुछ संबंध रहा हो।
- यह भी हो सकता है कि 'नागर' जन इसमें लिखा करते थे, अतः 'नागरी' अभिधान पड़ा और जब संस्कृत के ग्रंथ भी इसमें लिखे जाने लगे तब 'देवनागरी' भी कहा गया।
- सांकेतिक चिह्नों या देवताओं की उपासना में प्रयुक्त त्रिकोण, चक्र आदि संकेतचिह्नों को **'देवनागर'** कहते थे। कालांतर में नाम के प्रथमाक्षरों का उनसे बोध होने लगा और जिस लिपि में उनको स्थान मिला- वह 'देवनागरी' या 'नागरी' कही गई। इन सब पक्षों के मूल में कल्पना का प्राधान्य है, निश्चयात्मक प्रमाण अनुपलब्ध हैं।

देवनागरी लिपि का इतिहास

- मुंबई के परेल नामक उपनगर में प्राप्त प्राचीन देवनागरी शिलालेख। यह सन् 1109 ई. में बनाया गया था। वाराणसी में देवनागरी लिपि में लिखे विज्ञापन मुंबई के सार्वजनिक यातायात के टिकट पर देवनागरी मेलबर्न ऑस्ट्रेलिया की एक ट्राम पर देवनागरी लिपि स्वरूप प्राप्त हुआ।
- **देवनागरी, भारत, नेपाल, तिब्बत और दक्षिण पूर्व एशिया** की लिपियों के ब्राह्मी लिपि परिवार का हिस्सा है। गुजरात से कुछ अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिनकी भाषा संस्कृत है और लिपि नागरी लिपि। ये अभिलेख पहली ईसवी से लेकर चौथी ईसवी के कालखंड के हैं।
- ध्यातव्य है कि नागरी लिपि, देवनागरी से बहुत निकट है और देवनागरी का पूर्वरूप है। अतः ये अभिलेख इस बात के साक्ष्य हैं कि प्रथम

खंड-द्वितीय : निर्धारित पाठ

1

कबीर : (1398-1518 ई.)

कबीर ग्रन्थावली (सं. श्यामसुन्दर दास)

(साखी - प्रारम्भिक 5 अंग, पद - प्रारम्भिक 10 पद)

साखी (प्रारम्भिक पाँच (5) अंग)

कवि परिचय

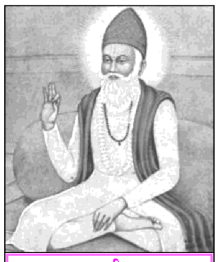
कबीर

जिस समय कबीर आविर्भूत हुए थे, वह समय ही भक्ति की लहर का था।

मुसलमानों के भारत में आ बसने से परिस्थिति में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया।

रामानन्द जी के बारह शिष्यों में से कुछ इस मार्ग के प्रवर्तन में प्रवृत्त हुए जिनमें से कबीर प्रमुख थे।

शेष में **सेना, धन्ना, भवानंद, पीपा और रैदास** थे, परन्तु उनका उतना प्रभाव नहीं पड़ा जितना कबीर का।

'नरहर्यानंद' जी ने अपने शिष्य **गोस्वामी तुलसीदास** को प्रेरित करके उनके कर्त्तव्य से सगुण रामभक्ति का एक और ही स्रोत प्रवाहित कराया।

रामानन्द जी ने सबके लिए भक्ति का मार्ग खोलकर उनको प्रोत्साहित किया।

नामदेव **दरजी, रैदास, चमार, दादू, धुनिया, कबीर जुलाहा** आदि समाज की नीचे की श्रेणी के ही लोग थे।

परन्तु उनका नाम आज तक आदर से लिया जाता है।

रामानन्द जी के शिष्यों में से दो स्त्रियाँ थीं, एक पद्मावती और दूसरी सुरसरी। आगे चलकर **'सहजो बाई'** और **'दयाबाई'** भी भक्तसंतों में से हुईं।

नामदेवजी जाति के **दर्जी** थे और दक्षिण के सतारा जिले के **नरसी बमनी** नामक स्थान में उत्पन्न हुए थे।

पंढरपुर में **'विठोबाजी'** का मंदिर है। ये उनके बड़े भक्त थे। पहले ये सगुणोपासक थे।

केवल **'नानक देवजी'** का चलाया **'सिक्ख सम्प्रदाय'** ही ऐसा है जिसमें जाति-पाँति का भेद नहीं आने पाया, परन्तु उसमें भी कर्मकांड की प्रधानता हो गई है और ग्रंथसाहब का प्रायः वैसा ही पूजन किया जाता है जैसा मूर्तिपूजक मूर्ति का करते हैं।

कबीरदास के काल निर्णय के विषय में लोगों ने जो कुछ लिखा है, सब जनश्रुति के आधार पर है।

कबीर का समय भी अनुमान के आधार पर निश्चित किया गया है। डॉ. हंटर ने इसका जन्म संवत् 1437 में और विल्सन साहब ने मृत्यु संवत् 1505 में मानी है।

इनके निधन के संबंध में दो तिथियाँ प्रसिद्ध हैं—

1. संवत पंद्रह सौ और पाँच मौ मगहर कियो गमन।
अगहन सुदी एकादशी, मिले पवन में पावन।।

2. संवत् पंद्रह सौ पछत्तरा, कियो मगहर को गवन।
माघ सुदी एकादशी, रत्नो पवन में पवन।।

एक के अनुसार इनका परलोकवास संवत् 1505 में और दूसरे के अनुसार 1575 में ठहरता है। दोनों तिथियों में 70 वर्ष का अंतर है।

कबीर का जन्म 1398 ई. में काशी में हुआ माना जाता है।

माता-पिता

कबीरदासजी के जीवन की घटनाओं के संबंध में कोई निश्चित बात ज्ञात नहीं होती, क्योंकि उन सबका आधार जनसाधारण और विशेषकर कबीरपंथियों में प्रचलित दंतकथाएँ हैं।

काशी में एक सात्विक ब्राह्मण रहते थे जो स्वामी रामानंद जी के बड़े भक्त थे। उनकी एक विधवा कन्या थी।

उसे साथ लेकर एक दिन वे स्वामीजी के आश्रम पर गए।

प्रणाम करने पर स्वामीजी ने उसे पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया।

ब्राह्मण देवता ने चौंककर जब पुत्री का वैधव्य निवेदन किया तब स्वामीजी ने सखेद कहा कि मेरा वचन तो अन्यथा नहीं हो सकता है, परन्तु इतने से संतोष करो कि इससे उत्पन्न पुत्र बड़ा प्रतापी होगा।

आशीर्वाद के फलस्वरूप जब इस ब्राह्मण कन्या को पुत्र उत्पन्न हुआ तो लोक-लज्जा और लोकापवाद के भय से उसने उसे **लहर तालाब** के किनारे डाल दिया।

भाग्यवश कुछ ही क्षण के पश्चात् **नीरू नाम का एक जुलाहा** अपनी पत्नी नीमा के साथ उधर से आ निकला।

इस दम्पत्ति के कोई पुत्र न था। बालक का रूप पुत्र के लिये लालायित दम्पत्ति के हृदय में चुभ गया और वे इसी बालक का भरण-पोषण कर पुत्र वाले हुए।

आगे चलकर यही बालक परम **भगवद्भक्त 'कबीर'** के नाम से प्रसिद्ध हुए। कहीं उन्होंने अपने संबंध में कुछ कहा भी है वहाँ अपने को **जुलाहा** और **बनारस** का रहने वाला बताया है।

कुछ लोग कबीर को **'नीरू'** और **'नीमा'** का **औरस पुत्र** मानते हैं, परंतु इस मत के पक्ष में कोई साधार प्रमाण अब तक किसी ने नहीं दिया।

कबीर के गुरु

अपने गुरु **'रामानंद'** से प्रभावित होने से पहले कबीर पर हिंदू प्रभाव पड़ चुका था जिससे वे मुसलमान कुल में परिपालित होने पर भी **'पाहन'** पूजने वाल हो गए थे।

कबीर लोगों के कहने से कोई काम करने वाले नहीं थे। उन्होंने अपना सारा जीवन ही अपने समय के अंधविश्वासों के विरुद्ध लगा दिया था।

जब कालिदास धन के विषय में पूछता है, तो मल्लिका का उत्तर उसकी त्याग और प्रेम की पराकाष्ठा को दर्शाता है। वह कहती है कि एक प्रतिलिपि मिलने में वर्ष-दो वर्ष लग जाते थे, इसलिए धन एकत्रित करने के लिए बहुत समय मिल जाता था।

इन सीधे-सरल वाक्यों में उसकी वर्षों की तपस्या, अभाव और कष्टपूर्ण जीवन की पूरी कहानी छिपी है।

मल्लिका के इस अकल्पनीय त्याग को जानकर कालिदास टूट जाता है। उसे अपने जीवन के अभाव और अपनी भूलें और भी बड़ी प्रतीत होने लगती हैं।

उसे पश्चात्ताप होता है कि उसे वर्षों पहले ही यहाँ लौट आना चाहिए था, ताकि वह इस प्रेरणादायक वातावरण में वह सब लिख पाता जो ''आषाढ़ के मेघों की तरह'' उसके अंदर वर्षों से घुमड़ रहा था, परन्तु सही ऋतु और वायु (अर्थात् सही प्रेरणा और परिवेश) न मिलने के कारण बरस नहीं पाया।

अंत में, जब वह उन कोरे पृष्ठों को देखता है जिसे मल्लिका ने सहेजकर रखा था, तो त्रासदी अपने चरम पर पहुँच जाती है।

मल्लिका बताती है कि यह उसकी वह भेंट थी जो वह वर्षों पहले देना चाहती थी, ताकि कालिदास उस पर अपने सबसे बड़े महाकाव्य की रचना करे।

परन्तु वह आकर भी नहीं आया और अब वे पन्ने भी पुराने और टूटने लगे हैं। यह केवल पन्नों का टूटना नहीं, बल्कि मल्लिका के सपनों, उसकी आशाओं और उसके जीवन के टूटने का प्रतीक है।

विशेष टिप्पणी—

रस—इस अंश में करुण रस है।

अलंकार—यहाँ स्वभावोक्ति अलंकार का उत्कृष्ट प्रयोग है।

RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. मोहन राकेश के अनुसार 'लहरों के राजहंस' नाटक अपने पहले रूप में किस विधा में लिखा गया था? [II ग्रेड • 08-09-2025]

(A) कहानी (B) रेडियो नाटक
(C) गीति नाट्य (D) उपन्यास **[A]**

2. निम्नांकित में से मोहन राकेश-कृत नाटक नहीं है— [II ग्रेड (संस्कृत) • 13-02-2023]

(A) आषाढ़ का एक दिन (B) मादा कैक्टस
(C) आधे अधूरे (D) लहरों के राजहंस **[B]**

3. मोहन राकेश रचित 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक किसकी जीवनी पर आधारित है? [II ग्रेड • 04-07-2019]

(A) तुलसीदास (B) मोहन राकेश
(C) कालिदास (D) जयशंकर प्रसाद **[C]**

4. 'अँधेरे बंद कमरे' उपन्यास के रचनाकार हैं— [II ग्रेड • 01-07-2017]

(A) मोहन राकेश (B) राजेन्द्र यादव
(C) निर्मल वर्मा (D) यशपाल **[A]**

5. मोहन राकेश ने अश्वघोष के काव्य 'सौन्दरनन्द' की कथा को आधार बनाकर साहित्य की किस विधा में रचना नहीं की? [II ग्रेड • 23-02-2014]

(A) कहानी (B) रेडियो नाटक
(C) नाटक (D) उपन्यास **[D]**

अन्य परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. मोहन राकेश ने कहानी संग्रह में 'नए बादल' कहानी की रचना किस वर्ष में की?

(A) 1950 में (B) 1957 में
(C) 1973 में (D) 1974 में **[B]**

2. मोहन राकेश की निम्न कहानियों को उनके वर्षों से सही मिलन कीजिए—

कहानियाँ	वर्ष
(1) एक और जिंदगी	(a) 1950
(2) इंसान के खंडहर	(b) 1961
(3) एक घटना	(c) 1973
(4) क्वार्टर	(d) 1974

सही मिलान है—

(A) 1(a), 2(c), 3(b), 4(b)
(B) 1(b), 2(b), 3(c), 4(d)
(C) 1(b), 2(a), 3(a), 4(a)
(d) 1(c), 2(d), 3(a), 4(a) **[C]**

3. निम्न में से 'काँपता हुआ दरिया' उपन्यास की रचना से संबंधित वर्ष है—

(A) 1998 (B) 1972 (C) 1968 (D) 1961 **[A]**

4. निम्न में से कौनसा मोहन राकेश कृत अनुवाद नहीं है—

(A) मृच्छकटिक (B) शाकुंतलम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) परिवेश **[D]**

5. निम्न में से कौनसी एकांकी मोहन राकेश की नहीं है?

(A) बहुत बड़ा सवाल (B) प्यालियाँ टूटती हैं
(C) अंडे के छिलके (D) स्याह और सफेद **[D]**

6. निम्न में कौनसा यात्रा वृत्तान्त मोहन राकेश द्वारा रचित है?

(A) समय सारथी (B) सिपाही की माँ
(C) आखिरी चट्टान तक (D) बिना हाड़ मांस के आदमी **[C]**

7. निम्न में से मोहन राकेश की जीवनी कौन सी है?

(A) समय सारथी (B) क्वार्टर
(C) सत्य और कल्पना (D) काँपता हुआ दरिया **[A]**

8. मोहन राकेश की बाल साहित्य से संबंधित रचना है—

(A) एक घटना (B) बिना हाड़ माँस के आदमी
(C) रात बीतने तक (D) आखिरी-चट्टान तक **[B]**

9. 'स्याह और सफेद' रचना किसके द्वारा लिखी गई है?

(A) मोहन राकेश (B) रामधारी सिंह दिनकर
(C) सूर्यमल्ल मिश्रण (D) प्रेमचंद **[A]**

10. वर्ष 1959 में मोहन राकेश को किस रचना के लिए भारत सरकार द्वारा संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कार दिया गया?

(A) आखिरी चट्टान तक (B) समय सारणी
(C) बकलम खुद (D) आषाढ़ का एक दिन **[D]**

11. मोहन राकेश को किस नाटक के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार दिया गया?

(A) पहचान (B) आधे-अधूरे

(C) एक और जिंदगी (D) छतरियाँ [B]

12. मोहन राकेश के बचपन का नाम क्या था?
(A) मदन मोहन गुगलानी (B) मोहन प्रकाश गुलाटी
(C) मदन प्रकाश राकेश (D) सूरज प्रसाद गुगलानी [A]

13. वर्ष 1971 में मोहन राकेश को संगीत नाटक अकादमी द्वारा उनकी संपूर्ण नाट्य रचना व नाट्य सेवा के लिए किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?
(A) सर्वश्रेष्ठ लेखक पुरस्कार (B) संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार
(C) नेहरू फेलोशिप पुरस्कार (D) नाट्य लेखन पुरस्कार [D]

14. वर्ष 1971 में मोहन राकेश को नाट्य शोध के लिए कौनसा पुरस्कार प्राप्त हुआ था?
(A) नेहरू फैलोशिप (B) गाँधी फैलोशिप
(C) इंदिरा फैलोशिप (D) गायन फैलोशिप [A]

15. उज्जयिनी का राज्य कालिदास को किसलिए सम्मानित करना चाहता था?
(A) उनकी वीरता के लिए
(B) उनकी रचना 'ऋतुसंहार' के लिए
(C) उनकी चित्रकारी के लिए
(D) उनके सामाजिक कार्यों के लिए [B]

16. कालिदास को उज्जयिनी जाने के लिए कौन प्रेरित करती है?
(A) अम्बिका (B) मल्लिका
(C) प्रियंगुमंजरी (D) उनकी माँ [B]

17. अम्बिका, मल्लिका की माँ, कालिदास के प्रति कैसा भाव रखती है?
(A) बहुत स्नेह और सम्मान का (B) उदासीनता का
(C) संदेह और अविश्वास का (D) घृणा का [C]

18. नाटक का कौन-सा पात्र एक (निंदक) यथार्थवादी व्यक्ति है और स्वयं को मल्लिका का 'अधिकारी' समझता है?
(A) निक्षेप (B) दन्तुल (C) विलोम (D) मातुल [C]

19. दूसरे अंक में कालिदास गाँव किस रूप में लौटते हैं?
(A) एक संन्यासी के रूप में
(B) कश्मीर के शासक और राज-कवि के रूप में
(C) एक साधारण नागरिक के रूप में
(D) एक व्यापारी के रूप में [B]

20. दूसरे अंक में कालिदास के साथ गाँव कौन आई थी?
(A) उनकी माँ (B) उनकी पत्नी, साम्राज्ञी प्रियंगुमंजरी
(C) उनकी बहन (D) उनकी सेविका [B]

21. प्रियंगुमंजरी मल्लिका से मिलकर क्या प्रस्ताव रखती है?
(A) उसे उज्जयिनी में राज-आश्रय में रखने का
(B) कालिदास से दूर रहने का
(C) गाँव छोड़कर चले जाने का
(D) उसे धन देने का [A]

22. नाटक में उज्जयिनी किसका प्रतीक है?
(A) प्रकृति और सादगी का
(B) सत्ता, कृत्रिमता और भौतिक सफलता का
(C) कला और साहित्य का
(D) प्रेम और त्याग का [B]

23. तीसरे अंक के अंत में मल्लिका की क्या स्थिति होती है?
(A) वह कालिदास की प्रतीक्षा कर रही होती है
(B) वह उज्जयिनी चली जाती है
(C) वह विलोम की पत्नी बन चुकी होती है और उसकी एक बच्ची होती है
(D) वह एक संन्यासिनी बन जाती है [C]

24. कालिदास तीसरे अंक में क्यों लौटता है?
(A) मल्लिका से विवाह करने
(B) गाँव में बसने के लिए
(C) कश्मीर का शासन और पद त्याग कर
(D) अपनी पुरानी रचनाएँ लेने [C]

25. नाटक के अंत में कालिदास को क्या प्राप्त होता है?
(A) मल्लिका का प्रेम (B) उज्जयिनी का राजपद
(C) अकेलापन और रिक्तता (D) गाँव वालों का सम्मान [C]

26. नाटक में मातुल का चरित्र कैसा है?
(A) गंभीर और दार्शनिक
(B) धूर्त और चालाक
(C) कुछ हद तक हास्यपूर्ण और कालिदास की प्रसिद्धि पर गर्व करने वाला
(D) वीर और साहसी [C]

27. यह नाटक मुख्य रूप से किसके द्वंद्व को दर्शाता है?
(A) प्रेम और घृणा के
(B) अमीर और गरीब के
(C) सर्जनात्मकता (कला) और सांसारिक यथार्थ (जीवन) के
(D) राजा और प्रजा के [C]

28. कालिदास की किस प्रसिद्ध रचना का उल्लेख नाटक में बार-बार आता है, जिसे उन्होंने विरह में लिखा था?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मेघदूत
(C) कुमारसंभव (D) रघुवंशम् [B]

29. मल्लिका कालिदास की प्रेरणा-स्रोत होने के लिए क्या त्याग करती है?
(A) अपना घर
(B) अपना धन
(C) अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यक्तिगत सुख
(D) अपनी सहेलियाँ [C]

30. ''समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता'' – यह भाव नाटक के किस पात्र के जीवन से सबसे स्पष्ट रूप से व्यक्त होता है?
(A) कालिदास (B) विलोम
(C) प्रियंगुमंजरी (D) मल्लिका [D]

31. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के मुख्य पुरुष पात्र कौन हैं?
(A) विलोम (B) मातुल
(C) कालिदास (D) दन्तुल [C]

32. नाटक की नायिका का क्या नाम है, जो कालिदास से निस्वार्थ प्रेम करती है?
(A) अम्बिका (B) प्रियंगुमंजरी
(C) मालिनी (D) मल्लिका [D]

33. नाटक के तीनों अंक किस स्थान पर घटित होते हैं?
(A) उज्जयिनी के राजमहल में (B) कालिदास के घर में
(C) मल्लिका के घर में (D) गाँव की चौपाल पर [C]

34. प्रथम अंक के आरम्भ में राजपुरुष दन्तुल ने किसे घायल कर दिया था?
(A) एक पक्षी को (B) एक हरिण-शावक को
(C) मल्लिका को (D) मातुल को [B]

खंड-तृतीय : हिन्दी शिक्षण एवं शिक्षण विधियाँ

(अ)

भाषायी कौशलों के विकास हेतु निम्नांकित पक्षों के स्वरूप का शिक्षण

- ✧ श्रवण कौशल
- ✧ उच्चारण कौशल
- ✧ वर्तनी कौशल
- ✧ वाचन (सस्वर व मौन) कौशल
- ✧ अभिव्यक्ति (लिखित व मौखिक) कौशल
- ✧ सूक्ष्म शिक्षण कौशल

1 श्रवण कौशल शिक्षण

भाषायी कौशल

- ❖ मनुष्य में भाषा सीखने की प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहती है। उसकी इस प्रवृत्ति का प्रमाण शैशवावस्था में मिल जाता है।
- ❖ जब वह अनुकरण के माध्यम से अपने माता-पिता तथा घर के अन्य सदस्यों से ध्वनियाँ ग्रहण करता है, ध्वनि समूहों को समझने लगता है और उन्हें बोलने लगता है।
- ❖ यह स्वाभाविक प्रवृत्ति ही उसे भाषा सीखने की ओर प्रशस्त करती है।

भाषायी कौशलों का विकास

- ❖ भाषा कौशल के विकास में बालक पहले दूसरों की ध्वनि को ध्यानपूर्वक सुनता है, वह बोलने वाले के मुख की ओर गौर से देखता रहता है, फिर उसी का अनुकरण करता हुआ बोलने का प्रयास करता है।
- ❖ बार-बार बोलते-बोलते उसे उच्चारण करना आ जाता है फिर ध्वनि लिपि साम्य से वह ध्वनियों को लिपि चिह्नों में पहचानने लगता है, यहाँ से उसका पठन प्रारम्भ होता है—गतिपूर्वक पठन के बाद लिखने का अभ्यास करता है। इनमें कुशलता अर्जित करने पर बालक भाषा सीख लेता है।
- ❖ बच्चा **बोलकर, सुनकर, पढ़कर** और **लिखकर** विचारों का आदान-प्रदान करता है।
- ❖ इस प्रकार इन योग्यताओं को विकसित करना ही भाषा-शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है।
- ❖ ये कौशलात्मक उद्देश्य ही भाषाई कौशल कहे जाते हैं। ये चार हैं—

1.	श्रवण कौशल	3.	मौखिक अभिव्यक्ति कौशल
2.	पठन कौशल	4.	लेखन कौशल

- ❖ भाषा एक कला है, दूसरी कलाओं की भाँति इसे सीखा जाता है और सतत् अभ्यास से इसमें कुशलता आती है।
- ❖ साधन का दूसरा नाम अभ्यास है एवं कला की साधना अन्ततः आदत बन जाती है।
- ❖ भाषा ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य किसी व्यक्ति, विषय या परिवेश के विषय में जानने का प्रयत्न करता है।
- ❖ अपनी जिज्ञासा को मनुष्य मौखिक या लिखित किसी रूप में प्राप्त उत्तर से शान्त कर लेता है।
- ❖ मौखिक रूप का प्रयोग करने के लिए वह सुनने और बोलने की क्रिया करता है और लिखित रूप का प्रयोग करने के लिए पढ़ने और लिखने की क्रिया करता है।
- ❖ श्रवण और पठन कौशल ग्राह्यात्मक कौशल और मौखिक अभिव्यक्ति व लेखन कौशल अभिव्यंजनात्मक कौशल कहे जाते हैं।
- ❖ चार भाषाई कौशलों को छात्रों में विकसित कर उनमें विचारों के आदान-प्रदान अर्थात् दूसरों के भाव व विचार ग्रहण करने और अपने भाव व विचार व्यक्त करने की क्षमता व योग्यता विकसित की जाती है।
- ❖ शुद्ध एवं शिष्ट बोलने वाले व्यक्ति को स्कूल में पढ़े व्याकरण के नियम याद न हों, लेकिन बोलने समय स्वतः उसके मुख से व्याकरण सम्मत शुद्ध भाषा ही निकलेगी।
- ❖ भाषा ज्ञानार्जन का सशक्त साधन है, परन्तु सबसे पहले भाषा कौशलों **'L.' 'S.' 'R.' 'W.'** में प्रवीणता प्राप्त करने की आवश्यकता होती है।
- ❖ भाषा के चार कौशल हैं—

L. Listening skill	**S. Speaking or oral skill**
R. Reading skill	**W. Writing skill**

- ❖ **श्री एस.के. देशपांडे** ने इस तथ्य पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है—"भाषा-शिक्षण का संबंध केवल ज्ञान प्रदान करना या सूचनाएँ प्रदान करना मात्र नहीं बल्कि भाषा सीखने वालों को इन चारों विविध कौशलों में दक्ष बनाना है।"

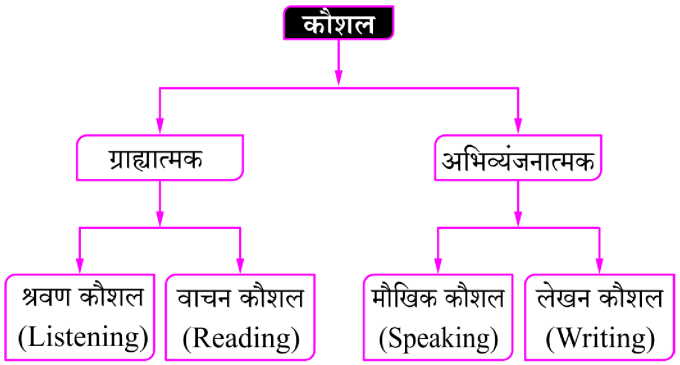

भाषा कौशल की विशेषताएँ

- ❖ भाषा कौशल को प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण तथा अभ्यास आवश्यक है।
- ❖ भाषा कौशल में शब्दों की अन्तः प्रक्रिया होती है।
- ❖ भाषा कौशल का उद्देश्य बोधगम्यता है।

वर्तनी कौशल शिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण तथ्य : [Exam Booster]

- भाषा की शुद्धता मुख्यतः शुद्ध अक्षर-विन्यास पर निर्भर करती है।
- हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। देवनागरी लिपि संसार की वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है।
- रायबर्न के मतानुसार ''अक्षरों की सीखने की सर्वोत्तम विधि वह है जिसमें तीनों का योग हो।''
- एकवचन से बहुवचन बनाने के नियमों का ज्ञान न होने के कारण ऐसी भूलें होती हैं।
- रेफ की अशुद्धि का कारण लिपि का अस्पष्ट ज्ञान ही होता है।
- जल्दी-जल्दी लिखने के कारण वर्तनीगत भूलें असावधानी के कारण हो जाती हैं।
- भूलों में स्वयं सुधार विधि को अपनाया जाए। अशुद्ध शब्दों को शुद्ध वर्तनी सहित पाँच-पाँच बार लिखवाया जाए।
- इस पद्धति में श्यामपट्ट पर शब्द लिखकर ढक दिया जाता है। कुछ समय उसे छात्र देखते हैं एवं कॉपियों पर लिखते हैं।
- रायबर्न ने लिखा है-''शुद्ध उच्चारण की शिक्षा, बालकों को शुद्ध वर्ण-विन्यास सीखने में अत्यधिक सहायता करती है।''

वर्तनी कौशल शिक्षण हेतु परीक्षोपयोगी स्मरणीय बिन्दु

- वर्तनीगत अशुद्धियों के भेद—
  1. मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ
  2. वचन संबंधी अशुद्धियाँ
  3. रेफ संबंधी अशुद्धियाँ
  4. विभक्ति संबंधी अशुद्धियाँ
  5. संयुक्त अक्षर संबंधी अशुद्धियाँ
  6. अनुनासिक संबंधी अशुद्धियाँ
  7. अनुस्वार संबंधी अशुद्धियाँ
  8. 'इ' और 'ई' संबंधी अशुद्धियाँ
  9. 'उ' व 'ऊ' कार संबंधी अशुद्धियाँ
  10. 'ओ' व 'औ' की अशुद्धियाँ
- वर्तनीगत अशुद्धियों के कारण
  1. अशुद्ध उच्चारण
  2. व्याकरण की अनभिज्ञता
  3. उच्चारण की विषमता
  4. लिपि का अधूरा ज्ञान
  5. लेखन में असावधानी
  6. प्रान्तीय प्रभाव
  7. शब्दों के संबंध में सर्वमान्यमत व एकरूपता का अभाव
  8. पर्याप्त विस्तृत अध्ययन का अभाव
  9. शिक्षक द्वारा वर्तनीगत भूलों का सुधार न करना
- वर्तनीगत अशुद्धियों के निराकरण हेतु उपाय—
  1. लिखित कार्य के संशोधन के समय त्रुटियों का सुधार करना
  2. अशुद्धियों का वर्गीकरण
  3. वर्तनीगत भूलों के निराकरणार्थ अभ्यास मालाओं का प्रयोग

RPSC ग्रेड-2nd की विगत भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. वर्तनी की अशुद्धि का व्यावहारिक कारण है [II Grade • 08-09-2025]
(A) उच्चारण का वैषम्य (B) लिपि का ज्ञान न होना
(C) अभ्यास का अभाव (D) संयुक्ताक्षरों का प्रयोग **[C]**

2. विद्यार्थियों के शैक्षिक रूप से पिछड़ेपन के शारीरिक कारण के अन्तर्गत निम्न में से कौनसा कारण नहीं है? [II Grade (San.) • 28-12-2024]
(A) अल्प स्मृति (B) शारीरिक दोष
(C) शारीरिक विकलांगता/दुर्बलता (D) उच्चारण दोष **[A]**

3. बनावटीपन से उच्चारण का व्यवहार, बालक के भाषायी पिछड़ेपन के निम्न में से किस कारण में आता है? [II Grade (San.) • 28-12-2024]
(A) स्वास्थ्य दोष (B) दूषित वातावरण
(C) बुद्धि मंदता (D) दुरभ्यास **[D]**

4. हिन्दी भाषा की अशुद्धियों का सही वर्ग नहीं है— [II Grade (San.) • 13-02-2023]
(A) वाचन संबंधी अशुद्धियाँ (B) लेखन संबंधी अशुद्धियाँ
(C) विन्यास संबंधी अशुद्धियाँ (D) अध्यापन संबंधी अशुद्धियाँ **[D]**

5. आजकल वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ माध्यमिक स्तर तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर काफी पाई जा रही हैं, जिनका कारण नहीं है— [II Grade • 22-12-2022]
(A) व्याकरण की अनभिज्ञता
(B) उच्चारण की शुद्धता
(C) लिपि के उचित ज्ञान का अभाव
(D) लेखन का प्रचुर अभ्यास **[D]**

6. पढ़ना सिखाने के लिए साहचर्य प्रणाली का निर्माण किसने किया? [II Grade (San.) • 20-02-2019]
(A) मॉण्टेसरी (B) मैंजिल
(C) फ्राबेल (D) जॉन डीवी **[A]**

7. अशुद्ध उच्चारण का कारण है— [II Grade (San.) • 20-02-2019]
(A) वागेन्द्रियों में विकार (B) सामाजिक प्रभाव
(C) प्रयत्न लाघव (D) अक्षरज्ञान **[*]**

8. कक्षा शिक्षण में उच्चारण में एकरूपता लाने में सहायक होगी— [II Grade • 01-11-2018]
(A) सूत्र विधि (B) भाषा-शिक्षण यंत्र विधि
(C) व्याख्यान विधि (D) इनमें से कोई नहीं **[B]**

9. किसी विद्यार्थी के उच्चारण दोष होने का कारण इनमें से हो सकता है— [II Grade • 01-11-2018]
(A) शुद्ध उच्चारण का ज्ञान न होना
(B) प्रयत्न लाघव
(C) शुद्ध उच्चारण का ज्ञान न होना तथा प्रयत्न लाघव दोनों
(D) इनमें से कोई नहीं **[C]**

अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

1. वर्तनी की विधिवत शिक्षा का ज्ञान किस स्तर पर होना चाहिए?
(A) प्राथमिक स्तर (B) उच्च प्राथमिक स्तर
(C) माध्यमिक स्तर (D) उच्च माध्यमिक स्तर **[A]**

2. 'हिन्दी शिक्षण में मूल ध्वनियों की संख्या अधिक होना' उच्चारण में किस स्तर के छात्रों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है?
(A) किशोर स्तर पर (B) युवा स्तर पर
(C) शिशु स्तर पर (D) प्रौढ़ स्तर पर **[C]**

3. श्रुतलेख में रेफ संबंधी अभ्यास नहीं है—
(A) कर्म (B) कबूतर (C) धर्म (D) प्रकाश **[B]**

दक्ष की पुस्तकें Online Order करने के लिए www.dakshbooks.com पर जायें

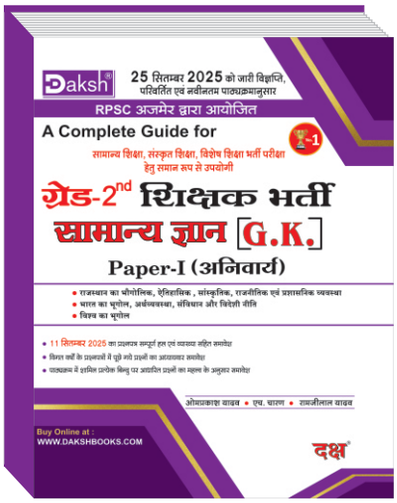

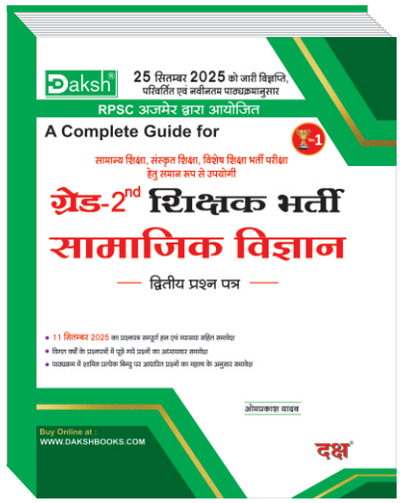

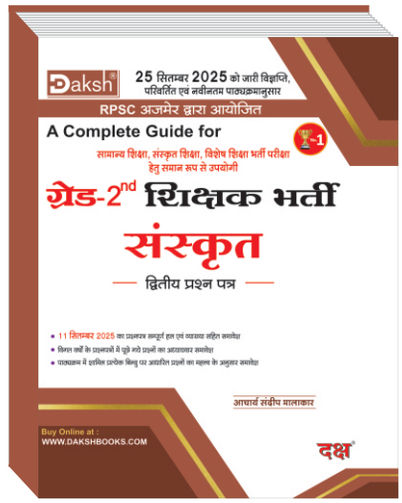

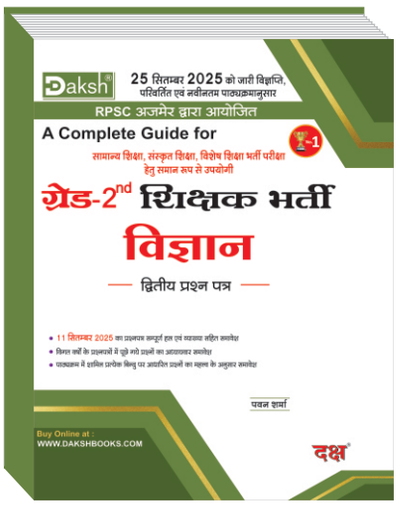

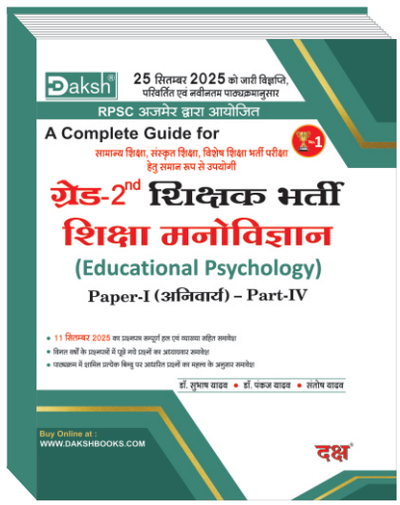

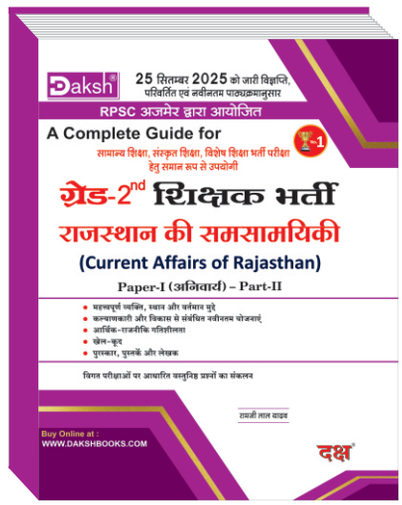

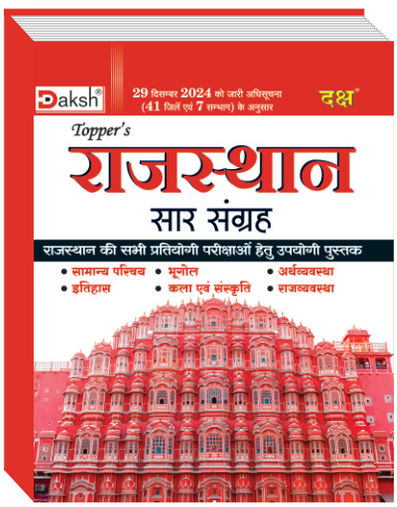

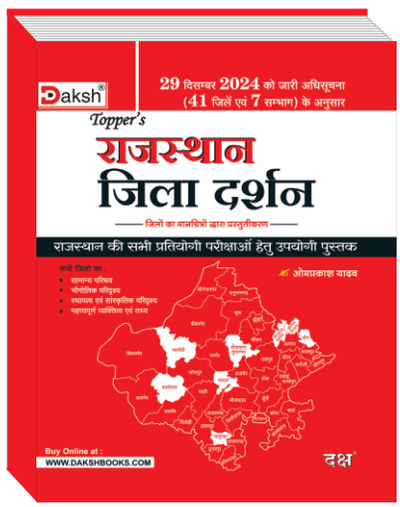

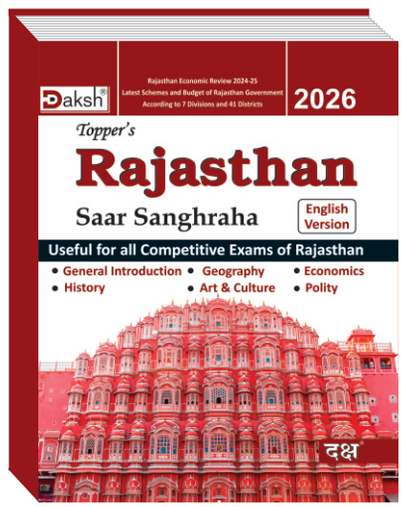

DAKSH PUBLICATIONS
(A Unit of College Book Centre)
A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)
फोन नं. 0141-2604302
Code No. D-901 | ₹ 1380/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु
WWW.DAKSHBOOKS.COM
पर ORDER करें
★ SPECIAL DISCOUNT + FREE DELIVERY ★